41. भारत – इजिप्ट राजनीतिक संबंध के 75वीं वर्षगांठ के परिपेक्ष्य में भारत–इजिप्ट संबंध की चर्चा करे तथा समुद्री व्यापार मार्ग के संदर्भ में इजिप्ट का भारत के लिए महत्व को बताएँ।

उत्तर हाल ही में मिस्त्र ने भारत के साथ राजनयिक संबंधो की 75वीं वर्षगांठ मनाने के लिए डाक टिकट जारी किया भारत और मिस्त्र के बीच राजनयिक संबंध तब शुरू हुए जब मिस्त्र ने भारत की स्वतंत्रता के तीन दिन बाद 18 अगस्त 1947 को भारत की स्वतंत्रता की मान्यता दी। 1950 के दशक में दोनों देश और भी करीब आ गए, जिसके परिणामस्वरूप 1955 में एक ऐतिहासिक मित्रता संधि हुई।

अथवा

भारत और मिस्त्र पारंपरिक रूप से ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और मैत्रीपूर्ण संबंध रहे हैं। दोनों देश इस साल राजनयिक संबंधों की स्थापना के 75 साल पूरे होने का जश्न मना रहे हैं। 2022–23 में G-20 की भारत की अध्यक्षता के दौरान मिश्र को अतिथि देश के रूप में आमंत्रित किया गया है। मिश्र अफ्रीका को भारत के सबसे बड़े व्यापारिक साझेदारों में एक रहा है।

वित्तीय वर्ष 2021–22 के दौरान भारत–मिश्र द्विपक्षीय व्यापार 7.26 बिलियन अमेरिकी डॉलर के रिकॉर्ड उच्च स्तर को छू गया।

भारत–मिस्र संबंध

भारत मिस्र द्विपक्षीय व्यापार :–

- 3015 बिलियन अमीरिकी डॉलर के वर्तमान भारतीय निवेश के साथ मिस्र इस क्षेत्र में भारत के लिए सबसे बड़े निवेश स्थलों में से एक है।
- इसके अलावा, मिस्र में 50 भारतीय कंपनियां काम कर रही है, जो कुल 3.15 अरब डॉलर का निवेश कर रही है, जो कुल 3015 अरब डॉलर का निवेश कर रही है और 38,000 नौकरियां सृजित कर रही हैं।
- वे कपड़े कृषि, रसायन, ऊर्जा मोटर, वाहन और खुदरा क्षेत्रों में है। वित्त वर्ष 2021–22 में भारत–मिस्र द्विपक्षीय व्यापार 7.26 बिलियन अमेरिकी डॉलर के ऐतिहासिक रिकॉर्ड उच्च स्तर पर पहुँच गया, जो वित्त वर्ष 2020–21 की तुलना में 75% अधिक है।

ऐतिहासिक संबंध :–

- विश्व की दो सबसे पुरानी सभ्यताओं भारत और मिस्र का प्राचीन काल से निकट संपर्क का इतिहास रहा है। सामान्य युग से पहले भी, अशोक के अभिलेखों में टॉलेमी द्वितीय के तहत मिस्र के साथ उसके संबंध का उल्लेख है।
- आधुनिक समय में, महात्मा गाँधी और साढ़ जघलौल ने अपने देशों की स्वतंत्रता पर लक्ष्य साझा किए।
- गमाल अब्देल नासिर और जवाहरलाल नेहरू के बीच असाधारण रूप से घनिष्ठ मित्रता जिसके कारण 1955 में दोनों देशें के बीच मैत्री संधि हुई।

सांस्कृतिक संबंध :–

- मौलाना आजाद सेंटर फॉर इंडियन कल्चर (MACIC) दोनों देशों के बीच हिंदी, उर्दू और योग कक्षाओं जैसी नियमित गतिविधियों के माध्यम से सांस्कृतिक सहयोग को बढ़ावा दे रहा है।
- सेमिनार; फिल्म शो; प्रदर्शनियों और स्थानीय सांस्कृतिक गतिविधियों में भागीदारी।
- पिछले छह दशकों से दूतावास की प्रमुख अरबी वजिका सौत–उल–हिंद जुलाई 2017 में अपने 500वें संस्करण के प्रकाशन के साथ एक मील के पत्थर पर पहुँच गई, जिसमें दोनों देशों के बीच मजबूत बंधन और जीवंत सांस्कृतिक आदान–प्रदान का चित्रण किया गया है।

राजनीतिक संबंध :–

- भारत और मिस्र द्विपक्षीय, क्षेत्रीय और वैश्विक मुद्दों पर संपर्कों और सहयोग के लंबे इतिहास के आधार पर करीबी राजनीतिक समझ साझा करते हैं।
- दोनों देशों ने बहुपक्षीय मंचों पर निकटता से सहयोग किया है और गुटनिरपेक्ष आंदोलन के संस्थापक सदस्य थे।
- वर्ष 2022 का विशेष महत्व है क्योंकि यह भारत और मिस्र के बीच राजनयिक संबंधों की 75वीं वर्षगांठ का प्रतीक है।
- दोनों देश गुटनिरपेक्ष आंदोलन के संस्थापक सदस्य है। दोनों देशों ने वर्ष 1955 में मैत्री संधि पर हस्ताक्षर किए थे।
- वर्ष 1983 में भारत–मिस्र संयुक्त आयोग की स्थापना की गई थी।

आर्थिक संबंध :–

- भारत–मिस्र द्विपक्षीय व्यापार समझौता मार्च 1978 से चल रहा है और यह मोस्ट फेवर्ड नेशन कॉलोज पर आधारित है और पिछले दस वर्षों में द्विपक्षीय व्यापार पर पाँच गुना से अधिक बढ़ गया है।
- 2018–19 में द्विपक्षीय व्यापार 4.55 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुँच गया है।
- महामारी के बावजूद, व्यापार की मात्रा 2019–20 में मामूली रूप से घटकर 4.5 बिलियन अमेरिकी डॉलर हो गई थी। लेकिन वर्तमान समय में भारत और मिस्र के बीच व्यापार 7.26 बिलियन डॉलर के पास पहुँच गया है।
- 2021–22 में द्विपक्षीय व्यापार की तेजी से विस्तार हुआ है। जो वित्त वर्ष 2020–21 की तुलना में 75% की वृद्वि दर्ज करते हुए 26 बिलियन हो गया है।
- इस अवधि के दौरान मिस्र को भारत का निर्यात 3.74 B$ था, जो वित्त वर्ष 2020–21 की समान अवधि की तुलना में 65% अधिक है। वहीं, भारत में मिस्र का निर्यात 86% की वृद्वि दर्ज करते हुए 3.52 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुँच गया।

विकास सहायता

- सहायता अनुदान परियोजनाओं में शामिल हैं : अलेक्जेंड्रिया विश्वविद्यालय में पैन अफ्रीका टेली–मेडिसिन और टेली–एजुकेशन परियोजना, अगवीन गाँव में सौर विद्युतीकरण परियोजना और काहिरा के शौबरा में कपड़ा प्रौद्योगिकी के लिए व्यावसायिक प्रशिक्षण केंद्र, जो पूरे हो चूके है।

- तकनीकी सहयोग और सहायता हमारे द्विपक्षीय संबंधों का एक प्रमुख हिस्सा रहा है। 2000 के बाद में, मिश्र के 1250 से अधिक अधिकारी ITEC और ICCR और IAFS छात्रवृत्ति जैसे अन्य कार्यक्रमों से लाभान्वित हुए है।
- वैज्ञानिक सहयोग के क्षेत्र में आईसीएआर और मिस्र का कृषि अनुसंधान केंद्र कृषि अनुसंधान के क्षेत्र में काम कर रहे है।
- CISR और NRC के बीच द्विवार्षिक कार्यकारी कार्यक्रमों और वैज्ञानिक सहयोग कार्यक्रम के माध्यम से विज्ञान और प्रौद्योगिकी सहयोग कार्यान्वित किया जाता है।
- अंतरिक्ष सहयोग भारत और मिस्र के बीच सहयोग का उभरता हुआ वर्टिकल है। समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए जाने के बाद से इसरो और NRSS के बीच संयुक्त कार्य समूह की बैठकें और चर्चाएं हुई हैं।

रक्षा संबंध :–

- 1960 के दशक में संयुक्त रूप से एक लड़ाकू विमान विकसित करने के प्रयासों के साथ वायु सेना के बीच घनिष्ठ सहयोग था।
- IAF पायलटों ने 1960 से 1984 तक मिस्र के पायलटों को भी प्रशिक्षित किया था।
- अधिकांश वर्तमान रक्षा सहयोग संयुक्त रक्षा समिति (JDC) की गतिविधियों द्वारा निर्धारित किया जाता है।
- मिस्र ने 2014 में पुणे में आयोजित मिश्र अफ्रीकी देशों के लिए बहुराष्ट्रीय प्रशिक्षण अभ्यास में भाग लिया। पहला IAF-EAF संयुक्त सामरिक वायु अभ्यास, डेमर्ट बारियर 2021 में आयोजित किया गया था।
- 8 से 22 जनवरी 2022 तक जोधपुर में नियोजित भारत और मिस्र के बीच पहला विशेष बल अभ्यास ''चक्रवात'' स्थगित कर दिया गया है।

समुद्री व्यापार मार्ग एवं मिश्र तथा भारत के लिए महत्व :–

- हिंद–प्रशांत क्षेत्र सदैव ही भारत के लिए काफी महत्वपूर्ण रहा है, जानकार इसका सबसे प्रमुख कारण इस क्षेत्र से होने वाले समुद्री व्यापार को मानते हैं।
- इसके अलावा अपनी सैन्य शक्ति मजबूत करने के लिए भारत संयुक्त राज्य अमेरिका, आसियान, जापान, कोरिया और वियतनाम जैसे देशों के साथ कई नौसैनिक अभ्यासों में भी शामिल है।
- ऐसे में भारत का मिस्र के साथ व्यापार भारत के लिए काफी लाभदायक होगा।
- हिंद–प्रशांत महासागर में भारत एक बड़ी ताकत है, हिंद महासागर की सुरक्षा लाल सागर की सुरक्षा से शुरू होती है। वहीं मिस्र के लिए लाल सागर की सुरक्षा स्वेज नहर से जुड़ी हुई है।
- स्वेज नहर और लाल सागर की सुरक्षा, वे पहलू है, जिनसे मिस्र का भारत और हिंद महासागर कनेक्शन बढ़ जाता है।
- स्वेज नहर की सुरक्षा मिस्र पर ही निर्भर है, हिंद–प्रशांत क्षेत्र में मिस्र का सामरिक महत्व है, ऐसे में मिस्र के साथ मजबूत साझेदारी हिंद–प्रशांत क्षेत्र में भारत की स्थिति को और मजबूत बनाएगी।
- लाल सागर में समुद्री लुटेरों पर भी अंकुश लगाने हेतु मिस्र का महत्व भारत के लिए काफी महत्वपूर्ण है। अर्थात् मिस्र लाल सागर में समुद्री व्यापार हेतू भारत के लिए ढाल बनकर खड़ा रह सकता है।
- अर्थात् हिंद–महासागर में भारत की उपस्थिति में और मजबूती मिस्र के लाल सागर में उपस्थिति होने पर निर्भर करता है। अर्थात् मिस्र के साथ भारत का संबंध सुदृढ़ रह सकता है।
- वर्तमान परिदृश्य में ऐसा कहा जाता है कि जिसकी पकड़ समुद्री व्यापार पर होगा वह इस अर्थ पर राज करेगा अर्थात् समुद्री व्यापार सुरक्षा किसी देश के आर्थिक विकास को सुनिश्चित करती है।

भारत–मिस्र संबंधों का महत्व

- पश्चिमी एशिया और उत्तरी अफ्रीका के देशों के साथ चीन के बढ़ते संबंधों को देखते हुए मिस्र के साथ भारत के संबंध महत्वपूर्ण है।
- दोनों देश बहुध्रुवीय विश्व में गुटनिरपेक्ष आंदोलन के लिए एक साझा आधार प्रदान करते हैं।
- इससे अब्राहम फ्रेमवर्क को मजबूती मिलती है। यह फ्रेमवर्क भारत, इजरायल और संयुक्त अरब अमीरात के मध्य रणनीतिक हितों में समन्वय को बेहतर कर रहा है।
- मिस्र अफ्रीका में भारत की विकासात्मक भूमिका के लिए आधार प्रदान करता है।
- मिश्र ने घरेलू मोर्चे पर कट्टरपंथी इस्लाम को नियंत्रित करने के लिए भारत से मदद मांगी थी।

वर्तमान परिदृश्य :–

- इस वर्ष की बैठक के दौरान भारत और मिस्र दोनों द्विपक्षीय संबंधों को रणनीतिक साझेदारी के रूप में बेहतर बनाने पर सहमत हुए।
- रणनीतिक साझेदारी के मोटे तौर पर चार तत्व होंगे; राजनीतिक, रक्षा और सुरक्षा, आर्थिक जुड़ाव इत्यादि।
- भारत एवं मिस्र ने प्रसार भारती और मिस्र के राष्ट्रीय मीडिया प्राधिकरण के बीच विषम–सामग्री विनिमय क्षमता निर्माण तथा सह–निर्माण की सुविधा हेतु तीन वर्ष के लिए समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए।

निष्कर्ष :– स्पष्टतः पश्चिम एशिया में सबसे अधिक आबादी वाला देश मिस्र, एक महत्वपूर्ण भू–रणनीतिक स्थान पर है क्योंकि वैश्विक व्यापार का 12% स्वेज नहर से होकर गुजरता है जो कि मिस्र का महत्वपूर्ण क्षेत्र है। यह भारत के लिए एक प्रमुख बाजार है और यूरोप तथा अफ्रीका दोनों के लिए प्रवेश द्वार के रूप में कार्य करता है। हालांकि इसके महत्वपूर्ण पश्चिम–एशियाई और अफ्रीकी देशों के साथ द्विपक्षीय व्यापार समझौते भी हैं जो भारत के लिए चिंता का विषय है।

42. SCO, G-20 तथा unsc के अध्यक्षता के संदर्भ में वैश्विक राजनीति में भारत की प्रभावशिलता बताएँ तथा चुनौतियों का परिक्षण करें।

उत्तर वर्तमान समय में विश्व रूस–यूक्रेन संकट के चलते समस्याएँ झेल रही है वही विश्व दो खेमों में बाँटती नजर आ रही है। ऐसे में भारत ने हमेशा की तरह कुटनीतिक का परिचय देते हुए न्यूट्रल रहते हुए अपने क्षमता का परिचय दिया । वर्तमान समय में भारत लगातार अपनी

क्षमता से अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर अपनी उपलब्धि को दर्शाता रहा है। ऐसे में G-20 एवं SCO तथा UNSC की अध्यक्षता भारतीय क्षमता का ही विस्तार है।

अथवा

भारत दुनिया का नया सिरमौर बनने की राह पर है, दुनिया की पांचवी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था भारत हाल के वर्षों में बड़ी वैश्विक शक्ति के रूप में उभरा है, वो बिना किसी संकोच के वैश्विक जिम्मेदारियों को निभाने के लिए भी पूरी तरह से तैयार है, ऐसे में भारत ने तीन बड़ी संगठन G20, SCO एवं UNSC की अध्यक्षता ग्रहण की है जो भारत की क्षमता को अंतर्राष्ट्रीय मंच पर परिदर्शित करता है। तथा वैश्विक राजनीतिक में भारत की प्रभावशिलता को दर्शाता है।

वैश्विक राजनीतिक में भारत की प्रभावशिलता

- किसी भी अन्य देश की तरह, भारत की विदेश नीति भी अपने प्रभाव क्षेत्र के विस्तार, विभिन्न राष्ट्रों के बीच अपनी भूमिका की वृद्धि और एक उभरती हुई शक्ति के रूप में अपनी उपस्थिति दर्ज कराने की परिकल्पना करती है।
- भारत की विदेश नीति के 21वीं शताब्दी में एक नए युग में प्रवेश करने के साथ ही बदलाव दिखाई पड़ता है। पिछले दो दशकों के दौरान भारतीय विदेश नीति में काफी परिवर्तन हुए है। दशकों पुरानी सुरक्षात्मक विदेश नीति में काफी परिवर्तन हुआ है।
- सुरक्षात्मक विदेश नीति के स्थान पर अब अधिक स्पष्ट एवं आक्रामक, संतुलित तथा विश्व पटल पर उभरती हुई महाशक्ति की नीति के रूप में दृष्टिगोचर होती है।
- वैश्विक मंच पर भारत ने अपनी हर संभव उपलब्धियों को चिन्हित किया है साथ ही, वैश्विक संगठन के साथ अपने संबंधों को प्रकट करते हुए भारत के तरफ देखने की नीति पर काफी ध्यान दिया है।
- वैश्विक संदर्भ में भारत ने अपनी अर्थव्यवस्था के संदर्भ में भी उपलब्धि दर्ज कराया है, भारत दुनिया का सबसे 5वीं बड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में उभरी है, तथा इसके विकास दर विकासशील रहा है।
- **5 ट्रिलियन की अर्थव्यवस्था बनने को तैयार है भारत** : भारत 2030 तक 5 ट्रिलियन की अर्थव्यवस्था बनाने का लक्ष्य रखा है, जो वैश्विक अर्थव्यवस्थाओं वाले देश भारत के तरफ इनवेस्टर के तौर पर देख रहे है।
- भारत बड़े–बड़े आर्थिक संगठन में जैसे–G-20, SCO, UNSS, G-7 में गेस्ट ऑफ ऑनर के रूप में SARRC तथा ASEAN जैसे संगठनों का सदस्य देश है, या कुछ का अवजर्बर रूप में शामिल हुआ है।
- वर्तमान समय में इंडिया नेतृत्वकर्त्ता के रूप में शामिल हुआ है इसी का परिणाम है, कि भारत आज बड़ी–बड़ी संगठनों की अध्यक्षता कर रहा है।
- भारत के तरफ से चाहे वो अंतर्राष्ट्रीय युद्ध का मामला हो (रुस–यूक्रेन) भारत ने अपने कूटनीतिक विचार सुदृढ़ रखे है, पहली बार ऐसा हुआ है कि भारत में यूरोपियन यूनियन के बातों का खुलकर विरोध जताया। इसी संदर्भ में विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने अपनी बातों को खुलकर रखा।
- ASEAN संगठन के RCEP में शामिल न होने का मामला हो चाहे UNSC में अपनी बातों को खुलकर रखने का मामला हो इस संदर्भ में भारत ने राष्ट्रीय मंच पर अपनी उपलब्धियों को दर्शाया है। तथा पहली बार अंतर्राष्ट्रीय मंच पर अपने नीति में बदलाव कर 'ना' कहने की हिम्मत दिखाई है।
- इस संदर्भ में भारत की राजनीतिक शक्ति में विस्तार हुआ है। वर्तमान परिदृश्य में भारत की विदेश नीति पूर्व की सभी नीतियों की अपेक्षा जोखिम लेने की प्रवृति सबसे अधिक है।
- बदलते वैश्विक राजनीतिक परिपेक्ष में भारत अपने आर्थिक और राजनीतिक हितों की पूर्ति के लिए किसी भी औपचारिक समूह पर निर्भरता को सीमित कर रहा है।
- किसी भी अन्य देशों के समान ही भारत की विदेश नीति का मुख्य और प्राथमिक उद्देश्य अपने, राष्ट्रीय हितों को सुरक्षित करना है।
- भारत की अपनी विकास की गति को बढ़ाने के लिए पर्याप्त वैश्विक राजनीतिक में इसकी क्षमता की आवश्यकता होगी। विभिन्न परियोजनाओं जैसे–मेक इन इंडिया, स्किल इंडिया, स्मार्ट सिटीज, इंफ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट, डिजिटल इंडिया, क्लीन इंडिया आदि को सफल बनाने के लिए भारत को विदेशी, सहयोगियों, विदेशी प्रत्यक्ष निवेश, वित्तीय सहायता और टेक्नोलॉजी की जरूरत है।
- विश्व भर में भारत का डायस्पोरा भी काफी मजबूत है और तकरीबन विश्व के सभी देशों में फैला हुआ है। भारत की विदेश नीति का एक अन्य उद्देश्य विदेशों में रह रहे भारतीय को संगठन कर वहाँ उनकी उपस्थिति का अधिकतम लाभ उठाना है, इसी के साथ उनके हितों को सुरक्षित रखना भी आवश्यक होता है।
- वर्त्तमान भारत संयुक्त राष्ट्र में स्थायी सदस्य के रूप में अपने आप को शामिल करने हेतु दावेदारी पेश कर रहा है, जिसमें विश्व के अधिकांश देशों ने भारत की इस दावेदारी का समर्थन किया है।
- साथ ही भारत की नीतियों एवं भारत की दावेदारी को अंतर्राष्ट्रीय मंच पर अनदेखा नहीं किया जा सकता है। इसलिए भारतीय क्षमता को वैश्विक संदर्भ में एक महत्वपूर्ण योगदान रहा है।
- वर्तमान समय में सबसे बड़ी संगठन की अध्यक्षता करना भारत के वैश्विक संदर्भ में क्षमता को प्रदर्शन कर रहा है, तथा भारतीय सक्षमता को वैश्विक स्तर पर मजबूती से देखा जा सकता है।

G-20 और भारत :–

- हाल ही में विदेश मंत्रालय ने घोषणा की भारत 1 दिसंबर 2022 से भारत वर्ष 2023 में नई दिल्ली में G-20 समूह के नेताओं के शिखर सम्मेलन की अध्यक्षता करेगा।
- भारत G20 अध्यक्ष के तौर पर बांग्लादेश, मिस्र, मॉरीशस, नीदरलैंड, नाइजीरिया, ओमान, सिंगापुर, स्पेन और संयुक्त अरब अमीरात को अतिथि देशों के रूप में आमंत्रित करेगा।

प्राथमिकताएँ :– समावेशी, न्यायसंगत और सतत् विकास

- **महिला सशक्तिकरण** :– स्वास्थ्य, कृषि और शिक्षा से लेकर वाणिज्य तक के क्षेत्रों में डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना एवं तकनीक–सक्षम विकास।
- कौशल–मानचित्रण, संस्कृति और पर्यटन; जलवायु वित्तपोषण; चक्रिय अर्थव्यवस्था; वैश्विक खाद्य सुरक्षा; ऊर्जा सुरक्षा; ग्रीन हाइड्रोजन इत्यादि।

भारत और SCO :–

- अंतर्राष्ट्रीय नजरिए से 2023 का साल भारत के लिए बेहद खास है, इस वक्त भारत दुनिया के सबसे ताकतवर आर्थिक समूह G20 की अगुवाई करने के साथ SCO की भी अध्यक्षता कर रहा है।
- SCO के अध्यक्षता के तौर पर भारत इसके सभी सदस्य देशों के साथ बेहतर तालमेल और सबको साथ लेकर चलने की नीति पर आगे बढ़ रहा है।
- भारत SCO की अध्यक्षता के दौरान सकारात्मक भूमिका तो निभा ही रहा है, यूरेशिया की बेहतरीन के लिए भी इस मंच का इस्तेमाल कर रहा है।
- SCO के सदस्य देशों के विदेश मंत्री की बैठक 4 और 5 मई को जेनेवा में होना है। भारत इसकी तैयारियों में जुटा हुआ है। उसने सदस्य देशों को शामिल होने हेतु औपचारिक नियंत्रण भी भेज दिया है।
- इसमें पाकिस्तान एवं चीन भी शामिल है।

भारत और UNSC :–

- 1 दिसंबर को भारत ने वर्ष 2021–22 में परिषद के निर्वाचित सदस्य होने के रूप में अपने दो वर्ष के कार्यकाल में दूसरी बार संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की अध्यक्षता संभाली है।
- भारत सुरक्षा परिषद में अंतर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा हेतु सुधारवादी बहुपक्षवाद हेतु नवीन अभिविन्यास पर उच्च स्तरीय खुली चर्चा आयोजित करेगा।
- सुरक्षा परिषद की स्थापना 1945 में संयुक्त राष्ट्र चार्टर द्वारा की गई थी। यह संयुक्त राष्ट्र के छह प्रमुख अंगों में एक है।

भारत के समक्ष चुनौतियाँ :–

- वर्तमान में विश्व एक असंतुलन और दिशाहीनता का शिकार है। वर्तमान में रूस–यूक्रेन युद्ध भारत के साथ–साथ पूरे विश्व के चुनौति के रूप में उभरा है।
- **कोविड–19 महामारी** :– कोविड–19 महामारी के प्रति एकजूट या सुसंगत अंतर्राष्ट्रीय प्रतिक्रिया के अभाव में विश्व में एक अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था की अनुपस्थिति और बहुपक्षीय संस्थानों की प्रभावहीनता की पुष्टि की है।
- जलवायु परिवर्तन और अन्य अंतर्राष्ट्रीय खतरों के प्रति भी अंतर्राष्ट्रीय प्रतिक्रिया अप्रभावी रही है।
- **वैश्विकरण से पीछे** हटना और संरक्षणवाद, व्यापार का क्षेत्रीयकरण, शक्ति संतुलन का स्थानांतरण, चीन एवं अन्य शक्ति संतुलन का स्थानांतरण, उदय और चीन–संयुक्त राज्य अमेरिका की रणनीतिक प्रतिद्वंदिता जैसे कारकों ने विश्व के भू–राजनीतिक और आर्थिक गुरूत्व केंद्रो को एशिया की ओर स्थानांतरित कर दिया है।

संकीर्ण राष्ट्रवाद :– राज्यों के बीच और उनके अंदर असमानता की स्थिति ने एक संकीर्ण राष्ट्रवाद और क्षेत्रवाद को जन्म दिया है। हम एक नए ध्रुवीकृत युग में प्रवेश कर रहे हैं, और ऐथ्रोपोजीन युग के पारिस्थितिक संकटों का सामना कर रहे हैं, जहाँ जलवायु परिवर्तन एक अस्तित्वपरक खतरा बनता जा रहा है।

- **रूसी चीन धुरी का विकास** :– रूस क्षेत्रीय मामलों में अधिकाधिक रूचि प्रदर्शित करने लगा है। इसके अलावा वर्ष 2014 में क्रीमिया के कब्जे के बाद रूस पर लगाए गए प्रतिबंध एवं हाल ही में रूस–यूक्रेन युद्ध से रूस पर लगाए गए प्रतिबंध ने रूस को चीन के निकट ला दिया है।
- इससे भारत जैसे देशों में उसकी रूचि कम होने का संकेत भी मिलता है। इसके साथ ही, अमेरिका के साथ भारत की निकटता ने भी रूस और ईरान जैसी पारंपरिक मित्रो के साथ भारत के संबंधों को कमजोर कर दिया है।
- **रूस–यूक्रेन युद्ध** :– भारत के सामने पहली एवं समुख सबसे बड़ी चुनौती के रूप में रूस–यूक्रेन युद्ध है। इस मुद्दे पर मोदी जी को संवेदनशील और नए तरीके से सोचने के जरूरत होगी, ताकि पश्चिमी और रूस दोनों को युद्ध का मैदान बन चुके यूक्रेन से पीछे हटाया जा सके।
- **महंगाई** :– दुनिया एवं भारत के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती के रूप में महंगाई उभर कर सामने आया है। रुस–यूक्रेन युद्ध से वैश्विक स्तर पर मुद्रास्फीति की समस्या छाई हुई है, भारत भी इससे अछूता नहीं है।
- फिलहाल G20 के तीन देशों में महंगाई दर 10% से अधिक है। सात देशों में महंगाई दर 7.5 से 10% के बीच है।
- **ऊर्जा की समस्या** :– रूस दुनिया को यह बता रहा है कि उसके खिलाफ प्रतिबंध भविष्य में उसकी अर्थव्यवस्था को जरूर प्रभावित कर सकते हैं, लेकिन फिलहाल इन प्रतिबंधों का उस पर कोई प्रभाव नहीं हो रहा है, हालांकि भारत ने रूस से तेल काफी मात्रा में आयात किया है।

धीमी और वैश्विक आर्थिक वृद्धि :–

- धीमी आर्थिक वृद्धि के साथ–साथ बढ़ती मुद्रास्फीति के कारण पैदा हुआ मंदी का खतरा है, विकसित देशों में यह स्थिति मांग में कमी के तौर पर दिखाई देती है। क्योंकि बढ़ती कीमत के वजह से लोग खरीदारी कम कर देते है।
- वस्तुतः भारत को इन सभी मुद्दों को G-20 के मंच पर रखना होगा और यह सुनिश्चित करना होगा कि यह ग्रुप इन सभी समस्याओं

से जूझ रही अर्थव्यवस्था पर ध्यान केंद्रीत करें। यदि सरकार की तरफ से विशेष प्रयास किया जाना आवश्यक हो तो इसके लिए यह जरूरी है कि आर्थिक वृद्धि के संकेत भी दिखाई देने चाहिए।

43. दक्षिण एशिया क्षेत्रीय सहयोगी के रूप में भारत आसियान संबंधों की विस्तारपूर्वक चर्चा करें। साथ ही भारत की विदेश नीति को आकार देने में SAARC और BIMSTAC जैसे क्षेत्रीय संगठनों की भूमिका का मूल्यांकन करें।

उत्तर दक्षिण एशिया में क्षेत्रीय आर्थिक एकीकरण का भारत का दृष्टिकोण दक्षिण एशिया में वृहत अंतर–क्षेत्रीय व्यापार, निवेश प्रवाह और क्षेत्रीय परिवहन एवं संचार लिंक पर आधारित है। दक्षिण एशिया क्षेत्रीय संघ और भारत की नेबहरहुड फार्स्ट नीति इसी दृष्टिकोण पर आधारित है। वर्तमान परिदृश्य में भारत द.–पू. एशिया में आसियान को देख रहा जो विकास की गति के लिए है।

अथवा

भारत–आसियान संबंध हाल ही में 12 नवंबर 2022 को कंबोडिया में आयोजित आसियान–भारत शिखर सममेलन के दौरान व्यापक रणनीतिक साझेदारी के स्तर तक बढ़ चुके है। श्री राजनाथ सिंह ने जोर देकर कहा कि हिंद प्रशांत क्षेत्र में आसियान की केंद्रीयता भारत की एक्ट ईस्ट नीति की आधार मिला है। वर्ष 2022 में भारत–आसियान संबंधों की 30वीं वर्षगांठ मनाई गई थी।

भारत–आसियान संबंध :–

- ऐतिहासिक पृष्ठभूमि
- भारत और द. पू. एशियाई देशों के संगठन आसियान की सामरिक साझेदारी, साझा ऐतिहासिक, भौगोलिक और सांस्कृतिक धरोहर पर आधारित है।
- आसियान के साथ भारत का संबंध हमारी विदेश नीति की एक प्रमुख आधारशिला के रूप में उभरा है। जिसका विकास 1990 के दशक के शुरूआत में भारत द्वारा प्रारंभ 'लुक ईस्ट पॉलिसी' से माना जाता है।
- वर्ष 1992 में भारत को आसियान का क्षेत्रीय भागीदार पार्टनर तथा वर्ष 1996 में एक डायलॉग पार्टनर बनाया गया।
- भारत और आसियान में पहले से ही 25 साल की डायलॉग पार्टनरशिप 15 साल की समिट लेवल इंटरेक्शन और 5 साल की रणनीतिक साझेदारी है।

भारत के लिए आसियान का महत्व :–

- भारत को आर्थिक और सुरक्षा दोनों कारणों से आसियान देशों के साथ घनिष्ठ राजनीतिक संबंध की आवश्यकता है।
- आसियान राष्ट्रों के साथ अच्छे संबंध पूर्वोत्तर राज्यों की आर्थिक वृद्धि सुनिश्चित करते है।
- चीन की बढ़ती गतिविधियों को काउंटर करने के लिए एक स्वस्थ्य भारत आसियान संबंध अति आवश्यक है।
- इंडो–पेसेफिक में नियम–आधारित सुरक्षित वातावरण के लिए आसियान देशों के साथ संबंध अच्छे होने चाहिए।
- क्योंकि अधिकांश समुद्री व्यापार इसी क्षेत्र में होता है और इस क्षेत्र में चीन अपनी गतिविधियाँ बढ़ा रहा है।
- पूर्वोतर में उग्रवाद का मुकाबला करने, आतंकवाद से निपटने आदि के लिए आसियान देशों के साथ सहयोग आवश्यक है।

हाल ही में हुए शिखर सम्मेलन के प्रमुख विषयः–

- भारत–प्रशांत क्षेत्र
- आसियान केंद्रीय एक्ट ईस्ट नीति
- भारत–आसियान कनेक्टिविटी
- आसियान–भारत कार्ययोजना
- RCEP
- बैठक में आसियान–भारत कार्ययोजना (2021–25) को आगे कार्यान्वयन के लिए चरणों पर विचार–विमर्श किया गया।

आर्थिक सहयोग :–

- आसियान भारत का चौथा सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार है।
- भारत ने आसियान के साथ वर्ष 2009 में वस्तु क्षेत्र में मुक्त व्यापार समझौता और वर्ष 2014 में सेवाओं व निवेश में मुक्त व्यापार समझौता पर हस्ताक्षर किए।
- FTA को लागू होने के बाद से इनके बीच व्यापार लगभग दोगूना होकर वर्ष 2019–20 में 87B$ से अधिक हो गया।
- अप्रैल 2021 से फरवरी 2022 की अवधि में भारत और आसियान क्षेत्र के बीच वस्तु व्यापार 98.39 B$ तक पहूँच गया।

सांस्कृतिक एवं सामाजिक सहयोगः–

- आसियान द्वारा लोगों से लोगों के संपर्क को बढ़ावा देने के लिए कई कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। जैसे कि आसियान देश के छात्रों को भारत में आमंत्रित करना, आसियान राजनयिकों के लिए विशेष प्रशिक्षण पाठ्यक्रम, सांसदों का आदन–प्रदान आदि।

रक्षा सहयोग :–

- संयुक्त नौसेना और सैन्य अभ्यास भारत और अधिकांश आसियान देशों के बीच आयोजित किए जाते हैं।
- पहला आसियान–भारत समुद्री अभ्यास वर्ष 2023 में आयोजित किया जाएगा।
- वाटरशेड सैन्य अभ्यास वर्ष 2016 में आयोजित किया गया।
- वियतनाम परंपरागत रूप से रक्षा मुद्दों पर घनिष्ठ मित्र रहा है, सिंगापुर भी इतना ही महत्वपूर्ण भागीदार है।

भारत–प्रशांत क्षेत्र :–

- भारत और आसियान द्वारा इस बात पर सहमति व्यक्त की गई की हिंद–प्रशांत क्षेत्र में अंतर्राष्ट्रीय कानूनों, विशेषकर 'UNCLOS' व्यवस्था के पालन के साथ–साथ इस क्षेत्र में एक नियम आधारित व्यवस्था को बढ़ावा देने के महत्व को उजागर किया जाए।
- दोनों पक्षों ने दक्षिण चीन के भाँति, स्थिरता और सुरक्षा को बढ़ावा देने के लिए निविगेशन तथा ओवरलाइट की स्वतंत्रता सुनिश्चित करने पर बल दिया गया।

आसियान केंद्रित एक्ट ईस्ट नीतिः–

- आसियान–देशों द्वारा भी भारत–प्रशांत क्षेत्र में शांति और स्थिरता को बढ़ावा देने में भारत के योगदान को स्वीकार किया और आसियान केंद्रीयता आधारित भारत की एक्ट ईस्टनीति का स्वागत किया गया।
- भारत–आसियान कनेक्टिविटी
- आसियान देशों और भारत के बीच भौतिक एवं डिजिटल कनेक्टिविटी के महत्व को रेखांकित किया गया तथा भारत–आसियान कनेक्टिविटी का समर्थन करने के लिए 1 बिलियन डॉलर की क्रेडिट लाइन के भारत के दोहराया गया।

RCEP का मुद्दा :–

- भारत के RCEP समझौते से बाहर होने के बावजूद आसियान–भारत द्वारा व्यापार बढ़ाने पर सहमति व्यक्त की गई है।
- RCEP एक 'मुक्त व्यापार समझौता' है जिस पर चीन, ऑस्ट्रेलिया, दक्षिण कोरिया, जापान और दस आसियान देशों द्वारा 15 नवम्बर 2020 को हस्ताक्षर किया गया।

भारत आसियान संबंधों में चुनौतियाँ:–

- भारत और आसियान देशों के लिए बुनियादी ढाँचे का विकास और कनेक्टिविटी एक बड़ी चुनौति बन गई है।
- हाल ही में प्रधानमंत्री ने भी भौतिक और डिजिटल कनेक्टिविटी पर जोर देने की बात कही है।
- दक्षिण चीन सागर में चीन की उपस्थिति द. चीन सागर में तेल, गैस और संसाधनों के स्वामित्व, नियंत्रण, उपयोग और शोषण का मुद्रा चीन और वियतनाम, फिलिपिंस आदि के बीच प्रमुख विवाद बनकर उभरा है।
- इस मुद्दे ने आसियान को विभाजित किया है, और उनके बीच एकमत नहीं है।
- भारत के राष्ट्रीय हित की सुरक्षा के लिए इस क्षेत्र में समुद्री सुरक्षा आवश्यक है।

आर्थिक चुनौतियाँ :–

- आसियान के साथ भारत का 23.88 B$ का व्यापार घाटा है। आसियान–भारत वस्तु माल समझौते की फिर से समीक्षा किए जाने की आवश्यकता है।
- भारत ने RCEP से हट गया है, जिससे आर्थिक हित अधिक हो सकते है।

विखंडित परियोजनाएं :–

- भारत, म्यांमार, थाइलैंड त्रिपक्षीय राजमार्ग जैसी कई कनेक्टिविटी परियोजनाओं के लिए प्रतिबद्ध है। किंतु इन परियोजनाओं को पूरा करने में काफी समय लिया जा रहा है।
- वही चीन BRI के माध्यम से इन देशों की विश्वास हासिल कर रहा है।

सहयोग के क्षेत्र :– राजनीतिक सुरक्षा सहयोग

- यह आसियान–भारत संबंधों का प्रमुख और उभरा हुआ स्तंभ है।
- इसमें आतंकवाद और कट्टरता से निपटने के लिए अनुभव का समन्वय सहयोग और साझाकरण शामिल है।
- भारत आसियान सहयोग और साझाकरण शामिल है।
- भारत आसियान को अपनी भारत–प्रशांत सुरक्षा दृष्टि के केंद्र में रखता है।

सामाजिक सांस्कृतिक सहयोग:–

- दोनों पक्ष बौद्ध धर्म से धार्मिक रूप से जुड़े हुए है।
- लोगों से लोगों के बीच संपर्क बढ़ाने के लिए विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया है।

कनेक्टिविटी :–

- कनेक्टिविटी भारत और आसियान दोनों के लिए प्राथमिकता वाला क्षेत्र है।
- भारत ने भारत–म्यांमार थाईलैंड त्रिपक्षीय राजमार्ग और कालादान–मल्टीमॉडल परियोजना के कार्यान्वयन में काफी प्रगति की है।
- हालांकि भारत और आसियान देशों के बीच समुद्री और हवाई संपर्क बढ़ाने और कनेक्टिविटी के गलियारे को आर्थिक गलियारे में बदलने से मुद्दे अभी चर्चा में है।

भारत के विदेश नीति में SAARC और BIMSTEC का महत्व :–

- भारत की विदेश नहीं हमेशा से नेवरहुड फस्ट नीति के आधार पर संचालित होती रही है, अर्थात पड़ोसी का विकास के रूप में भारत के विकास को देखा जाता है।

नेबरहुड फार्स्ट नीति :–

- भारत की 'नेबरहुड फार्स्ट' नीति वसुधैव कुटुम्बकम के निर्माण के भारत के दृष्टिकोण का प्रतीक है।
- विकास सहायता :– भारत ने अपने वर्ष 2022–23 के बजट में पड़ोसी देशों और अफ्रीका एवं लैटिन अमेरिकी देशों की विकास सहायता के लिए 62,920 ड रूपए आवंटित किए है।
- वैक्सीन डिप्लोमेसी
- इसी संदर्भ में भारत ने सार्क को विदेश नीति का पहल बनाया।

सार्क (SAARC) :–

- दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन की स्थापना 8 दिसंबर, 1985 को ढाका में सार्क चार्टर पर हस्ताक्षर के साथ की गई थी।
- दक्षिण एशिया में क्षेत्रीय सहयोग का विचार सर्वप्रथम नवंबर 1980 में सामने आया था।
- इस संगठन का मुख्यायल एवं सचिवालय नेपाल के काठमांडू में अवस्थित है।

भारत के लिए महत्व :–

- **पहले पड़ोसी** :– देश के समीपतर्वी पड़ोसियों को प्रमुखता
- **भू–रणनीतिक महत्व** :– यह विकास प्रक्रिया एवं आर्थिक सहयोग में नेपाल, भूटान, मालदीव एवं श्रीलंका को आकर्षित करके चीन के वन बेल्ट एवं वन रोड कार्यक्रम का विरोध कर सकता है।
- **क्षेत्रीय स्थिरता** :– सार्क इन क्षेत्रों के बीच आपसी विश्वास एवं शांति स्थापना में सहयोग कर सकता है।

- **वैश्विक नेतृत्व की भूमिका** :– यह भारत में अतिरिक्त जिम्मेदारियाँ लेकर क्षेत्र में अपने नेतृत्व को प्रदर्शित करने के लिए मंच प्रदान करता है।

भारत की एक्ट ईस्ट पॉलिसी के लिए गेम चेंजर :–

- दक्षिण एशियाई अर्थव्यवस्था को द. पूर्व एशिया के साथ लिंक करके मुख्य रूप से सेवा क्षेत्र में भारत के लिए आर्थिक एकीकरण एवं समृद्धि को आगे लाया जा सकता है।

विम्सटेक (BIMSTAC) :–

- यह एक क्षेत्रीय बहुपक्षीय संगठन है तथा बंगाल की खाड़ी के तटवर्ती और समीपवर्ती क्षेत्रों में स्थित इसके सदस्य हैं जो क्षेत्रीय एकता का प्रतीक है।
- इसका उद्देश्य तीव्र आर्थिक विकास हेतू वातावरण तैयार करना, सामाजिक प्रगति में तेजी लाना और क्षेत्र में सामान्य हित के मामलों पर सहयोग को बढ़ावा देना है।

भारत के लिए महत्व :–

- **नेबरहुड फर्स्ट** :– देश की सीमा के नजदीकी क्षेत्रों को प्रधानता
- **एक्ट ईस्ट** :– भारत को द.–पू. एशिया से जोड़ता है।
- भारत के पूर्वोत्तर राज्यों का आर्थिक विकास
- बेल्ट एवं रोड इनिशिएटिव के विस्तारवादी प्रभावों से भारत को मुकाबला करने का अवसर प्रदान करता है।

दोनों संगठन में सहयोग के क्षेत्र

- व्यापार और निवेश
- प्रौद्योगिक
- ऊर्जा
- परिवहन एवं संचार
- पर्यटन
- मत्स्य पालन
- कृषि
- सांस्कृतिक सहयोग इत्यादि

44. हालिया समय में भारत के पड़ोसी देशों में अस्थिरता का माहौल देखा जा रहा है अपनी भागीदारी के माध्यम से क्षेत्रीय स्थिरता और सुरक्षा को बढ़ावा देने में भारत की भूमिका का मूल्यांकन करें। साथ ही सामरिक और आर्थिक अतिसंवेदनशीलता के लिए पड़ोसी के साथ क्षेत्रिय संपर्क की महत्व की व्याख्या करें।

उत्तर अपनी नेबरवुड फर्स्ट नीति के तहत भारत अपने सभी पड़ोसियों के साथ मैत्रीपूर्ण और पारस्परिक रूप से लाभप्रद संबंध विकसित करने के लिए प्रतिबद्ध है। भारत एक सक्रिय विकास भागीदार है और इन देशों में कई परियोजनाओं में शामिल है। भारत की 'नेबरहुड फर्स्ट' नीति स्थिरता और समृद्धि के लिए पारस्परिक रूप से लाभप्रद, जन–उन्मुख, क्षेत्रीय ढाँचे के निर्माण पर केंद्रीत है।

अथवा

भारत के 'नेबरहुड फर्स्ट' पॉलिसी की व्याख्या करते हुए अटल बिहारी बाजपेयी ने कहा था कि ''दुश्मन का चयन किया जा सकता है, लेकिन पड़ोसी का नहीं'' अर्थात् पड़ोसी देशों के साथ संबंध प्रकृत है जिसका कोई विकल्प नहीं है। इसलिए भारत ने अपने पड़ोसी देशों के साथ स्थायीत्व एवं सुरक्षा को महत्व देता है, क्योंकि पड़ोसी देश में शांति एवं सुरक्षा अपने देश के विकास को गति प्रदान करेगी।

हाल ही में हुए पड़ोसी देश में अशांतिः–

- **श्रीलंका** :– हाल ही में श्रीलंका में एक बहुत बड़ी संकट को देखा गया जहाँ श्रीलंका की राजनीतिक, आर्थिक एवं सामारिक स्थिति ध्वस्त हो गई थी। तथा यहाँ अशांति का माहौल पैदा हो गया था तथा महँगाई असमान छू रही थी।
- श्रीलंका में आर्थिक संकट ने वित्तीय संकट की स्थिति पैदा कर दी थी जिससे अशांति का माहौल बन गया था।
- जनता ने विरोध प्रदर्शन करते हुए राष्ट्रपति भवन में अपनी पैठ जमा ली थी जिससे राजनीतिक एवं प्रशासनिक संकट उत्पन्न हो गया था।

अफगानिस्तान :–

- अफगानिस्तान भारत का हमेशा से ही एक अच्छा मित्र रहा है, भारत की सामरिक संबंध अफगानिस्तान के साथ है, लेकिन हाल ही में हुए राजनीतिक एवं सत्ता परिवर्तन ने भारतीय सरकार को चुनौती दी है।
- अफगानिस्तान में तालीबानी सरकार ने वहाँ के राष्ट्रपति के तख्ता पलट कर सत्ता का परिवर्तन कर दिया तथा तालिबानी के मुख्य वहाँ के उच्च सत्ताधारी अध्यक्ष बना हुआ है, इससे अफगानिस्तान में शांति एवं सुरक्षा का माहौल बना हुआ है।
- **नेपाल** :– हाल ही में नेपाल में हुए चुनाव को उथल–पुथल देखा गया अंततः पुष्प कमल दहल की सरकार की सत्ता स्थापित हुई।
- नेपाल में भी मवेशियों की मामला सीमा विवाद हमेशा से एक बहुत बड़ी मुद्दा है जिससे नेपाल में भी हमेशा से अस्थिरता में असुरक्षा की भावना विकसित होती रही है।
- **म्यांमार** :– हाल ही में म्यांमार में सैन्य तख्तापलट के बाद सेना ने सत्ता हासिल कर ली, म्यांमार में एक वर्ष की अवधि के लिए आपातकाल लागू कर दिया गया था, और लोकतांत्रिक रूप से निर्वाचित नेता आंग–सान–सू को हिरासत में लिया गया था।
- इस प्रकार से म्यांमार में राजनीतिक अशांति एवं असुरक्षा की भावना प्रकट हुई है, जिससे असुरक्षा की स्थिति पैदा हुई है।
- भारत की म्यांमार में लोकतांत्रिक परिवर्तन की प्रक्रिया का समर्थन करता है।
- यद्यपि भारत म्यांमार के हालिया घटनाक्रम पर गहरी चिंता व्यक्त की है, किंतु म्यांमार की सेना से अपने संबंध खराब करना एक व्यवहार्थ विकल्प नहीं होगा।
- क्योंकि म्यांमार के साथ भारत के कई महत्वपूर्ण आर्थिक और सामरिक हित जुड़े हैं।

पाकिस्तान :–

- पाकिस्तान हमेशा से आतंकवाद पीड़ित देश रहा है तथा हर समय वहा अशांति का महौल बना रहता है।
- वर्तमान में पाकिस्तान की अर्थव्यवस्था बुरे दौरे से गुजर रही है। लोगों को बेसिक सुविधाएं भी नहीं मिल पा रही है और अगर मिल भी रही है तो कीमत सामान्य से ज्यादा है। ऐसे में भारत पर भी इसका असर पड़ सकता है।
- पाकिस्तान में चिकन से लेकर दूध तक और आटे से लेकर प्याज तक सभी के दाम आसमान छू रही है।
- बढ़ते कर्ज घटते विदेशी मुद्रा भंडार, राजनीतिक अस्थिरता और जीडीपी में भारी गिरावट से जूझ रहे पाकिस्तान की आर्थिक स्थिति दिन–ब–दिन बदतर होती जा रही है।
- इस प्रकार वहाँ अशांती एवं असुरक्षा भारत को चुनौती दे सकता है।

मालदीव :–

- मालदीव के समक्ष भारत की मूल चिंता इसकी सुरक्षा और विकास पर पड़ोसी देशों की राजनीतिक अस्थिरता का प्रभाव है। फरवरी 2015 में मालदीव के विपक्षी नेता मो. नशीद की आतंकवाद के आरोपों में गिरफ्तारी और उसके परिणामस्वरूप उत्पन्न हुए राजनीतिक संकट ने भारत की पड़ोस नीति के समक्ष एक वास्तविक कुटनीतिक परीक्षा जैसी स्थिति उत्पन्न की है।

क्षेत्रीय स्थिरता एवं सुरक्षा में भारत की भूमिकाः–

- भारत द्वारा पड़ोसी देशों में लोकतांत्रिक शक्तियों की नैतिक सहायता की गई है। इसके साथ ही भारत ने समय–समय पर वहाँ हो रहे मानवाधिकारों के हनन के विरूद्ध भी भारत ने कदम उठाये हैं।
- बांग्लादेश में मुक्तिवाहिनी का समर्थन, श्रीलंका में शांति सेना भेजना तथा अफगानिस्तान में लोकतंत्र की बहाली के प्रयास करना।
- दक्षिण एशिया में भारत का महत्व निर्विवाद है तथा भारत में वह क्षमता है, जिसके द्वारा वह पड़ोसी देशों के आर्थिक विकास में सहायता में भी संलग्न होता है।
- भारत द्वारा गंगा–मेकांग परियोजना, बीबी अई एन परियोजना भूटान में हाइड्रोपावर का विकास आदि कार्य किए गए हैं।
- अफगानिस्तान में भारत ने संसद निर्माण में योगदान दिया है।
- भारत ने आपदा के समय अपने पड़ोसियों का साथ दिया है। नेपाल का भुकंप राहत कार्यक्रम, डोकलाम मुद्दे पर भुटान का सहयोग अथवा मालद्वीव की सहायता, भारत ने अपने कर्तव्य का निर्वाह किया है।
- भारत द्वारा अपने पड़ोसियों के साथ सीमा विवादों, को बेहतर ढंग से हल किया गया है। जैसे बांग्लादेश के साथ स्थलीय तथा जलीय सीमा विवाद।
- भारत का पाकिस्तान तथा चीन से संबंध उतने बेहतर नहीं है। लगातार वार्ताओं के उपरांत भी पाकिस्तान सदा युद्ध के रूप में आतंकवाद को प्रेरित कर रहा है।
- भारत में हुए पुलवामा, पठानकोट जैसे आतंकी हमले की लिंक पाकिस्तान में पाई गई। भारत आतंकवाद पर शून्य सहिष्णूता की नीति का पालन करता है ऐसे में पाकिस्तान के साथ संबंध की अनिश्चित की ओर बढ़ रहे है।
- वहीं चीन द्वारा लगातार भारत की क्षेत्रीय अखंडता को विघटित करने का प्रयास किया जा रहा है। अभी हाल ही में भारत तथा चीन की सेनाए सीमा पर एक दूसरे के सम्मुख थी।
- पाकिस्तान तथा चीन के रूख को देखकर भारत को अपने पड़ोस के प्रति–नीतियों को और सुदृढ़ करना होगा।

भारत का सामरिक एवं आर्थक दृष्टि से क्षेत्रीय संपर्क :–

भारत–मालदीव

सुरक्षा साझेदारी

- हाल में भारत के विदेश मंत्री ने मालदीव की अपनी दो दिवसीय यात्रा के दौरान नेशनल कॉलेज फॉर पुलिसिंग एंड लॉ एनफोर्समेंट का उद्घाटन किया था।

पुनर्सुधार केंद्र :–

- अड्डू रिक्लेमेशन एंड शोर प्रोटेक्शन प्रोजेक्ट हेतु 80 मिलियन अमेरिकी डॉलर के अनुबंध पर हस्ताक्षर किए गए है।
- अछू में एक ड्रग डिटॉक्सिफिकेशन सेंटर का निर्माण भारत की मदद से किया गया है।
- यह सेंटर/केंद्र स्वास्थ्य, शिक्षा, मत्स्यपालन पर्यटन, खेल और संस्कृति जैसे क्षेत्रों में भारत द्वारा कार्यान्वित की जा रही 20 उच्च प्रभाव वाली सामुदायिक विकास परियोजना में से एक है।

आर्थिक सहयोग :–

- पर्यटन मालदीव की अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार है। वर्तमान में मालदीव कुछ भारतीयों के लिए एक प्रमुख पर्यटन स्थल है। और कई भारतीय वहाँ रोजगार के लिए जाते हैं।
- अगस्त 2021 में एक भारतीय कंपनी, एफकॉन में मालदीव में अब तक की सबसे बड़ी बुनियादी अवसंरचना परियोजना–ग्रेटर माले कनेक्टिविटी प्रोजेक्ट हेतु एक अनुबंध पर हस्ताक्षर किए थे।

भारत–भूटान :–

- भारत–भूटान शांति और मित्रता संधि 1949 यह संधि अन्य बातों के अलावा स्थायी शांति तथा मित्रता, युक्त व्यापार तथा वाणिज्य और एक–दूसरे के नागरिकों को समान न्याय प्रदान करने पर जोर देती है।

जल विद्युत सहयोग :–

- यह वर्ष 2006 के जलविद्युत सहयोग समझौते के अंतर्गत आता है। इस समझौते के एक प्रोटोकॉल के तहत भारत ने वर्ष 2020 तक भूटान को न्यूनतम 10,000 मेगावाट जल विद्युत के विकास एवं उसी से अधिशेष बिजली आयात करने पर सहमति व्यक्त की है।

आर्थिक सहायता :–

- भारत, भूटान के विकास में प्रमुख भागीदार देश है।

- वर्ष 1961 में भूटान की पहली पँचवर्षीय योजना के शुभारंभ के बाद से भारत, भूटान के लिए वित्तीय सहायता प्रदान कर रहा है।
- भारत ने भूटान की 12वीं पंचवर्षीय योजना के लिए 45,000 करोड़ रूपए प्रदान किए है।

भारत–नेपाल :– हाल ही में भारतीय प्रधानमंत्री ने बुद्ध की जन्मस्थली लुंबनी नेपाल का दौर किया, जहाँ उन्होंने भारतीय सहायता से बनाए जा रहे बौद्ध बिहार की नेपाली प्रधानमंत्री के साथ आधारशिला रखी।

- दोनों देशों ने 490.2 MW के अरूण–4 जलविद्युत परियोजना के विकास और कार्यान्वयन के लिए सतलज जल विद्युत निगम लिमिटेड और नेपाल विद्युत प्राधिकरण के बीच पाँच समझौता पर हस्ताक्षर किए।
- नेपाल ने भारतीय कंपनियों को नेपाल में प. सेती जलविद्युत परियोजना में निवेश करने के लिए भी आमंत्रित किया।

भारत–श्रीलंका

- भारत और श्रीलंका ने एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए, जिसने भारत को जाफना के तीन द्वीपों में हाइब्रिड विद्युत परियोजनाएं स्थापित करने की सुविधा प्रदान की।
- वर्तमान स्थितियों को सुधार हेतू भारत की सहायता।
- श्रीलंका भारत के लिए रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण भागीदार रहा है। भारत इस अवसर का उपयोग श्रीलंका के साथ अपने राजनयिक संबंधों को संतुलित करने के लिए कर सकता है जो चीन के साथ श्रीलंका की निकटता के कारण कुछ प्रभावित हुए है।
- श्रीलंका के साथ राजनायिक संबंधों का विस्तार भारत को हिंद–प्रशांत क्षेत्र में चीन के 'स्ट्रिंग ऑफ पर्ल' नीति से श्रीलंकाई द्वीपसमूह को दूर रखने के प्रयासों में मदद कर सकेगा।
- भारत द्वारा श्रीलंका को मार्च के मध्य से अभी तक 270,000 MT से अधिक डिजल और पेट्रोल दिया गया है।
- इसके अलावा, हाल ही में विस्तारित 1 B$ की ऋण सुविधा के तहत भारत द्वारा लगभग 40,000 टन चावल की आपूर्ति की गई है।

भारत के समक्ष चुनौतियाः–

- चीन का बढ़ता दबाव
- घरेलू मामलों में हस्तक्षेप
- भारत की घरेलू राजनीतिक का प्रभाव
- पश्चिमी देशों की ओर भारत के झुकाव का प्रभाव।

आगे की राह :–

- भारत की पड़ोस नीति गुजराल सिद्धांत पर आधारित होनी चाहिए।
- भारत की क्षेत्रीय आर्थिक और विदेश नीति को एकीकृत करना एक बड़ी चुनौती हुई है।
- इसलिए भारत को छोटे आर्थिक हितों के लिए पड़ोसियों के साथ द्विपक्षीय संबंधों से समझौता करने का विरोध करना चाहिए।
- क्षेत्रीय संपर्क को अधिक मजबूती के साथ आगे बढ़ाया जाना चाहिए जबकि सुरक्षा चिंताओं को लागत प्रभावी, कुशल और विश्वसनीय तकनीकी उपायों के माध्यम से संबोधित किया जाता है। जो दुनिया के अन्य हिस्सों में उपयोग में है।

45. (क) राष्ट्रीय लॉजिस्टिक्स नीति

उत्तर हाल ही में सरकार ने नेशनल लॉजिस्टिक्स पॉलीसी (National Logistic Policy) 2022 शुरू की है, जिसका उद्देश्य अंतिम समय तक तत्काल वितरण करना है, साथ ही, ट्रांसपोर्ट से संबंधित सेक्टर को समाप्त करना है। लॉजिस्टिक में संसाधन, लोग, चार्ट माल, सूची उपकरण आदि को एक स्थान से दूसरे स्थान पर अर्थात् उत्पादन अधिग्रहण से उपभोग, वितरण या अन्य उत्पाद पहल तक ले जाने के साथ समझौता, समन्वय, प्रक्रिया शामिल है।

राष्ट्रीय लॉजिस्टिक्स नीति – 2022

- लॉजिस्टिक्स शब्द संसाधनों का अधिग्रहण, भंडारण और वितरण को उनके इच्छित स्थान पर नियंत्रण करने की संपूर्ण प्रक्रिया का वर्णन करता है। विनिर्माताओं और आपूर्तिकर्ताओं का पता निर्धारण तथा ऐसे गैर–अधिकारों एवं पहुँच का मूल्यांकन करना शामिल है।
- राष्ट्रीय लॉजिस्टिक्स नीति प्रमुख क्षेत्र नीति जैसे कि टाटा री–इंजीनियरिंग, डिजिटाइजेशन और मल्टी–मॉडल ट्रांसपोर्टेशन पर केन्द्रित है।
- यह एक महत्वपूर्ण कदम है क्योंकि उच्च लॉजिस्टिक्स की लागत विभिन्न बाजार में घरेलू की प्रतिस्पर्द्धात्मकता को प्रभावित करती है।
- **उद्देश्य** :– इस नीति की मदद से लॉजिस्टिक्स लागत को कम करने का प्रयास किया जाएगा। इस नीति का उद्देश्य लागतों में कटौती करना है, जो वर्तमान में सकल घरेलू उत्पाद का लगभग 14–15% है। वर्ष 2030 तक लगभग 8% तक कमी आने की संभावना है।
- दुनिया की 5वीं सबसे बड़ी उद्योग होने के संबंध में भारत का लक्ष्य वर्ष 2030 तक सूचीबद्ध खाते में शीर्ष 10 में शामिल होना है।
- कुशल लॉजिस्टिक्स तंत्र को सक्षम करने के लिए डेटा–संस्कृति निर्णय समर्थन प्रणाली बनाना है।
- नीति का लक्ष्य यह सुनिश्चित करना है कि लॉजिस्टिक्स संबंधी मुद्दों को कम से कम करें, कई तथ्यों और छोटी–छोटी जगहों को कैप्चर करें और उनमें से काम करने वाले लोगों को अधिक लाभ मिले।

राष्ट्रीय लॉजिस्टिक्स नीति की विशेषताएं :–

- विशेषताएं – मानव संसाधन विकास, एकीकृत लॉजिस्टिक्स प्लेटफॉर्म, लॉजिस्टिक्स सेवाओं में आसानी से पहुँच, डिजिटल एकीकरण प्रणाली, व्यापक लॉजिस्टिकस कार्य योजना।
- राष्ट्रीय लॉजिस्टिक्स नीति की मुख्य विशेषता यह की यह तेजी से कार्य की गति को बढ़ाती है ताकि रसद सेवाओं को नियंत्रित किया जा सके।
- इसका उद्देश्य सभी लॉजिस्टिक्स ट्रांसपोर्ट क्षेत्र की डिजिटल सेवाओं को एक ही पोर्टल पर लाया जाएगा। जिससे निगम को लंबे और बोझिल जैसी मौजूदा रूप से मुक्ति मिलती जाएगी।

- लॉजिस्टिक्स सेवाओं में आसानी से ई–लॉग्स, नया डिजिटल प्लेटफॉर्म, उद्योग को तत्काल समाधान के लिए सरकारी प्राधिकरणों के साथ कार्यकारी संबद्ध मुद्दों को उठा सकेंगे।
- व्यापक लॉजिस्टिक कार्य योजना जिसमें एकीकृत डिजिटल लॉजिस्टिक्स सिस्टम, भौतिक प्रमाणपत्र का मानीकरण, प्राथमिकता मानक सेवा, मानव संसाधन विकास, क्षमता निर्माण, लॉजिस्टिक्स पार्कों का विकास आदि शामिल है।

महत्व :–

- इससे लक्ष्यों को एकाधिकार में बढ़ावा मिलेगा तथा साथ ही उद्योग में प्रतिस्पर्द्धा को बढ़ावा मिलेगा। राष्ट्रीय रसद नीति के साथ शुरू की गई पीएम गति को और बढ़ावा तथा पूरकता मिलेगी।
- यह नीति इस क्षेत्र को देश में एक एकीकृत, कुशल, लचीला और सतत रसद तंत्र बनाने में मदद करती है क्योंकि यह बताता है कि आपूर्ति प्रतिपक्ष की बाधाओं को दूर करने के साथ–साथ क्षेत्र के सभी बुनियादों को कवर करता है।
- यह नीति भारतीय वस्तुओं की धारणात्मकता में सुधार, आर्थिक विकास और रोजगार के अवसरों को बढ़ाने का एक प्रयास है।

निष्कर्ष : राष्ट्रीय लॉजिस्टिक्स पॉलिसी भारत को विकसित देश बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। जिसका मुख्य उद्देश्य लॉजिस्टिक्स क्षेत्र के लिए लागत को अगले पाँच वर्षों में 10% तक कम करने का प्रावधान है जो वर्तमान में सकल घरेलू उत्पादों के लगभग 13 से 14% होने का अनुमान है।

(ख) कृषि रोडमैप–4 के अंतर्गत कृषि क्षेत्र के मुख्य फोकस क्षेत्र में बदलाव पर संक्षिप्त टिप्पणी करें।

उत्तर कृषि क्षेत्र को लाभकारी बनाने एवं किसानों को आमदनी बढ़ाने के लिए सरकार द्वारा कई योजनाएं चलाई जाती हैं, जिससे कृषि संबंधित अलग–अलग क्षेत्रों को प्रोत्साहित किया जा सके। इस कड़ी में बिहार सरकार कृषि का रोडमैप तैयार कर उसके अनुसार योजनाओं क्रियान्वयन राज्य में करती है। इसी संदर्भ में कृषि का चौथा रोडमैप जारी किया गया जिसकी समयावधी की सीमा 2027–28 तक है।

कृषि रोडमैप–4

- तीसरे कृषि रोडमैप के आपार सफलता ध्यान में रखते हुए तथा कुछ क्षेत्रों से सिख लेते हुए सरकार ने कृषि रोडमैप–4 की शुरूआत की है। तथा इस नए कृषि मैप के फोकस एरिया में बदलाव किए गए है।
- बिहार अब गेहूँ, धान और मक्का उत्पादन में अधिशेष होने वाले राज्यों में शामिल हो चुका है, लेकिन तिलहन, दलहन, मिलेट आदि के उत्पादन में अभी भी पिछे है।
- चौथे कृषि रोड मैप में दलहन, तिलहन, मिलेट, कृषि विविधीकरण, वैल्यूएडिशन, जलवायु अनुकूलन कृषि के साथ–साथ लेयर फार्मिंग, डेयरी व फिशरीज पर तो फोकस रहेगा ही, कृषि और उद्यमिता एवं यांत्रिकरण के विकास पर जोर दिया गया है।
- फसल मांग आधारित बाजार व्यवस्था, समेकित कृषि प्रणाली, कोल्ड स्टोरेज की स्थापना, निजी भंडारगृह प्रोत्साहन, रासायनिक उर्वरक का विकल्प और वैकल्पिक उद्यमों का समावेशन पर भी जोर दिया गया है।

फोकस एरिया :–

नीचे मछली ऊपर बिजली :–

- चौर क्षेत्र के विकास कर मछली उत्पादन को बढ़ावा देने की योजना है, इसके लिए चौर क्षेत्र के विकास नीति बनायी जा रही है, चौर क्षेत्र के विकास के लिए नीचे मछली ऊपर बिजली के उत्पादन की योजना है।
- चौर क्षेत्र लीज पर देकर मछली पालन के साथ–साथ और ऊर्जा के लिए निजी क्षेत्र के बड़े प्लेयर को आमंत्रित किया जाएगा। चौथे कृषि रोड मैप के प्रथम वर्ष में पचास हजार हेक्टेयर चौर क्षेत्र विकसित किए जाएंगे।

उत्पादों की मार्केटिंग, ब्रांडिंग और ई–कॉमर्स व निर्यात पर जोर :–

- चौथे कृषि रोड मैप में उत्पादों की मार्केटिंग, ब्रांडिंग और ई–कॉमर्स को बढ़ावा देने वाली याजनाएं भी होंगी, दरअसल ई–कॉमर्स आज के दिन में उत्पादों को वैश्विक बाजार उपलब्ध करा रहा है। इसको देखते हुए स्थानीय उत्पादों की ब्रांडिंग के साथ–साथ पैकेजिंग की स्थानीय स्तर करने की व्यवस्था की जाएगी।

कृषि ऋण सुगमता :–

- कृषि रोड मैप–4 को सफल बनाने के लिए बेंकों का सहयोग लिया जाएगा। किसानों को कृषि ऋण सुगम तरीके से उपलब्ध हो इसके लिए बैंक और किसानों के बीच समन्वय पर ध्यान दिया जाएगा।
- पाँच साल में तकरीबन दो लाख करोड़ ऋण की आवश्यकता किसानों की होगी अभी राज्य के 1.64 करोड़ किसान में महज 10: को ही किसान क्रेडिट कार्ड मिला हुआ है।
- अधिक से अधिक किसानों को KCC कैसे मिले, इसके लिए वित्त और कृषि विभाग की भी जिम्मेदारी तय की जाएगी।
- **डिजिटल कृषि :–** किसानों को मौसम की स्थिति पर नवीनतम अपडेट प्रदान करना और विपणन के लिए आईटी से संबंधित समर्थन – एक और महत्वपूर्ण क्षेत्र होगा।
- ड्रोन के माध्यम से नैनो यूरिया का उपयोग भी कोड मैप में शामिल हुआ है। यह बिहार भी कृषि के एक नई अवधारणा होगी।

आर्द्रभूमि विकास कार्यक्रम :–

- चौथे कृषि रोडमैप के आर्द्रभूमि के विकास को लेकर बात कही गई है, अर्थात् आर्द्रभूमि के विकास से बिहार के किसानों को बहुआयामी फायदा होगा एक तो प्राकृतिक आपदा से फसलों को बचाया जा सकता है, साथ ही इससे किसानों की आय दुगूनी करने में सहायता मिलेगी।

निष्कर्ष : कृषि रोड मैप बिहार के लिए एक वरदान साबित हुआ है, पहली कृषि रोड मैप की शुरूआत 2007–08 में शुरू की गई थी इसके आपार सफलता के बाद हम कृषि रोड मैप–4 तक पहुँच गए हैं, लेकिन यह रोड मैप एक बहुआयामी है, क्योंकि कृषि के साथ–साथ

पशुपालन अपनाने पर ध्यान दिया गया है।

(ग) रूस–यूक्रेन युद्ध के संदर्भ में खाद्य सुरक्षा की भू–राजनीति पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखें।

उत्तर वर्तमान परिदृश्य में रूस–यूक्रेन युद्ध ने दुनिया के सामने एक बहुत बड़ी संकट के रूप में खड़ा है। इस युद्ध के चलते पूरे विश्व के भू–राजनीति पर प्रभाव पड़ा है, तथा खाद्य असुरक्षा की चिंताएँ पूरे मानवीय सहायता अधिकारी मार्टिन ग्रिफ्रिटस ने सुरक्षा परिषद में कहा है कि रूस–यूक्रेन युद्ध ने वैश्विक खाद्य असुरक्षा पर बहुत गहरे प्रभाव छोड़े है। उन्होंने इस क्षेत्र से अनाज और उर्वरक निर्यात के लिए ऐतिहासिक काला सागर अनाज निर्यात समझौते को आगे बढ़ाने की अति महत्वपूर्ण जरूरत को भी रेखांकित किया है।

रूस–यूक्रेन युद्ध एवं खाद्य सुरक्षा :–

- रूस–यूक्रेन युद्ध से सीधे जुड़े ये दोनों देश तो गंभीर रूप से प्रभावित हो ही रहे है, लेकिन यह युद्ध दुनिया की एक बड़ी आबादी को भूखमरी की तरफ भी ढकेल रही है।
- इसे लेकर विशेषज्ञों ने गंभीर चिंता जाहीर की है। एक तरफ जलवायु परिवर्तन ने पहले ही वैश्विक औसत कृषि उत्पादन को बुरी तरह प्रभावित किया है उसके बाद इस युद्ध को विश्व के खाद्यान्न उत्पादन पर दोहरी मार के तौर पर देखा जा रहा है।

खाद्य सुरक्षा पर प्रभाव :–

पैदावार में गिरावट :–

- कैनवरा यूनिवर्सिटी के खाद्य विशेषज्ञों के अनुसार जलवायु परिवत्रन पहले ही वैश्विक स्तर पर खाद्यान्न उत्पादो को कुल का पाँचवा हिस्सा कम कर चुका है। इस युद्ध ने इस समस्या को और गहराया है। रूस और यूक्रेन की दुनिया के कुल गेहूँ निर्यात में 30% की हिस्सेदारी है। ऐसे में अपनी खाद्य सुरक्षा को सुनिश्चित करने के लिए जो देश विशुद्ध आयात पर आश्रित है, उनके यहाँ भुखमरी की बड़ी समस्या पैर पसार रही है। पश्चिमी एशिया और उत्तरी अफ्रीका के सामने खाद्यान्न संकट उत्पन्न हो गया है।

कृषि उत्पादन और निर्यात :–

- यूक्रेन दुनिया के सबसे बड़े उत्पादकों और अनाज एवं अन्य कृषि उत्पादों के निर्यातकों में से एक है। युद्ध ने कृषि उत्पादन और निर्यात को बाधित कर दिया है, क्योंकि यूक्रेन पूरी तरह से ध्वस्त हो चुका है, तथा अभी भी युद्ध की परिस्थितियाँ वैसी की वैसी ही है। इससे वैश्विक स्तर पर भुखमरी एवं महंगाई में वृद्धि हुई है।

विस्थापन और गरीबी :–

- हाल ही में यूनाइटेड नेशन के एक रिपोर्ट में यह दावा किया गया है कि यूक्रेन में लगभग 6 मिलियन से अधिक लोगों का विस्थापन हुआ है, जिनमें कई लोग अपना घर और आजीविका खो दी है। इससे गरीबी और खाद्य असुरक्षा में वृद्धि हुई है, क्योंकि विस्थापित लोग खाने के लिए पर्याप्त भोजन खोजने हेतु संघर्षरत है। वही वैश्विक स्तर पर अफ्रीकी देशों में इससे भुखमरी की स्थिति पैदा हो गई है, साथ हिंसा की खबरे भी सुनाई दे रही है।

मुद्रास्फीति की वृद्धि :–

- इस युद्ध के कारण विश्व के गेहूँ, मक्का एवं जौ का एक महत्वपूर्ण अंश युद्ध के कारण रूस और यूक्रेन में अटक गया है, जबकि विश्व के उर्वरकों का इससे भी बड़ा अंश रूस और बेलारूस में फँस गया है।
- इसके परिणामस्वरूप वैश्विक खाद्य और उर्वरकों की कीमतें बढ़ रही है। रूसी, आक्रमण के बाद गेहूँ की कीमतों में 21% जौ की कीमतों में 33% तथा कुछ उर्वरकों की कीमतों में 40% की वृद्धि दर्ज की गई है।

ईंधन की कीमतों में उछाल :–

- रूस–यूक्रेन संघर्ष ईंधन की बढ़ती कीमतों के लिए जिम्मेदार है क्योंकि आपूर्ति श्रृंखला बाधित हो गई है, जो पहले से ही दबावग्रस्त वैश्विक आपूर्ति और विश्व भर में निम्न भंडारण स्तर पर और भी अधिक दबाव बढ़ाएगी।

दुनिया तक खाद्य पहुँच में कमी :–

- रूस और यूक्रेन दोनों ही प्रमुख खाद्य सामग्रियों और वस्तुओं के अग्रणी आपूर्तिकर्ता देश है, जिनमें गेहूँ, मक्का और सूरजमूखी के तेल जैसा सामान शामिल है, रूस, उर्वरकों का शीर्ष वैश्विक निर्यातक देश है। मर्टिन ग्रिफिक्स ने कहा की दुनिया इन आपूर्तियों पर निर्भर करती है और ऐसा अनेक वर्षों से होता आया।

निष्कर्षतः रूस यूक्रेन संकट ने दुनिया के सामने खाद्य सुरक्षा हेतु एक वैश्विक संकट खड़ा कर दिया है, हालांकि संयुक्त राष्ट्र ने रूस–युक्रेन से गेहूँ एवं अन्य खाद्य पदार्थों के आयात हेतु काला सागर अनाज निर्यात समझौते को आगे बढ़ाने का प्रयास किया जा रहा है।

46. भारत की विदेश नीति को आकार देने में SAARC, BRICS और BIMSTEC जैसी संगठनों की भूमिका का मूल्यांकन कीजिये।

उत्तर आधुनिक दुनिया आपस में बहुत अच्छे से गूंथी हुई है, और सभी देशों ने विदेश नीति को आकार देने में क्षेत्रीय संगठनों के महत्व को महसूस किया है। भारत, दक्षिण एशिया और व्यापक क्षेत्र में एक प्रमुख खिलाड़ी होने के नाते, अपनी विदेश नीति के लक्ष्यों को आगे बढ़ाने के लिए सार्क, ब्रिक्स और बिम्सटेक जैसे क्षेत्रीय संगठनों के साथ सक्रिय रूप से जुड़ा हुआ है।

भारत की विदेश नीति को आकार देने में सार्क, ब्रिक्स और बिम्सटेक जैसे संगठनों की भूमिका

- **क्षेत्रीय एकीकरण को बढ़ावा देनाः** सार्क, ब्रिक्स और बिम्सटेक ने भारत को पड़ोसी देशों के साथ जुड़ने और क्षेत्रीय एकीकरण को बढ़ावा देने के लिए एक मंच प्रदान किया है। इन संगठनों ने भारत को अन्य सदस्य देशों के साथ मजबूत संबंध बनाने और आम चुनौतियों का समाधान करने के लिए मिलकर काम करने में मदद की है।
- **आर्थिक सहयोग बढ़ानाः** इन संगठनों ने भारत को अन्य सदस्य देशों के साथ आर्थिक सहयोग बढ़ाने में मदद की है। व्यापार से संबंधित मुद्दों, निवेश और प्रौद्योगिकी हस्तांतरण पर संवाद और सहयोग के लिए एक मंच प्रदान किया है।
- **बढ़ती क्षेत्रीय सुरक्षाः** सार्क, ब्रिक्स और बिम्सटेक ने क्षेत्रीय सुरक्षा और स्थिरता को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

आतंकवाद, सीमा सुरक्षा और समुद्री सुरक्षा जैसे मुद्दों पर संवाद और सहयोग के लिए एक मंच प्रदान किया है।

- **सामरिक भागीदारी का निर्माण:** इन संगठनों ने भारत को अन्य सदस्य देशों के साथ रणनीतिक साझेदारी बनाने में मदद की है। उदाहरण के लिए, भारत की ब्रिक्स के भीतर रूस के साथ रणनीतिक साझेदारी है, जिसने भारत की रक्षा क्षमताओं को मजबूत करने में मदद की है।
- **सांस्कृतिक संबंधों को मजबूत करना:** सार्क, ब्रिक्स और बिम्सटेक ने भारत और अन्य सदस्य देशों के बीच सांस्कृतिक आदान–प्रदान और लोगों से लोगों के बीच संबंधों के अवसर प्रदान किए हैं। आपसी समझ और एक दूसरे की संस्कृतियों के प्रति सम्मान को बढ़ावा देने में मदद की है।
- **आम चुनौतियों का समाधान:** इन संगठनों ने सदस्य देशों को गरीबी, स्वास्थ्य देखभाल और आपदा प्रबंधन जैसी आम चुनौतियों पर चर्चा करने और उनका समाधान करने के लिए एक मंच प्रदान किया है। इन चुनौतियों का समाधान खोजने के लिए अन्य देशों के साथ मिलकर काम करने में भारत की मदद की है।
- **भारत के वैश्विक प्रभाव को बढ़ाना:** सार्क, ब्रिक्स और बिम्सटेक ने भारत को क्षेत्रीय और वैश्विक मुद्दों पर अन्य देशों के साथ जुड़ने के लिए एक मंच प्रदान करके अपना वैश्विक प्रभाव बढ़ाने में मदद की है। वैश्विक एजेंडे को आकार देने में अधिक सक्रिय भूमिका निभाने में भारत की मदद की है।
- **भारत के विकास एजेंडे का समर्थन:** इन संगठनों ने धन, तकनीकी सहायता और विशेषज्ञता तक पहुंच प्रदान करके भारत के विकास एजेंडे का समर्थन किया है। उदाहरण के लिए, भारत को बुनियादी ढांचा परियोजनाओं के वित्तपोषण और क्षेत्र में कनेक्टिविटी बढ़ाने के लिए ब्रिक्स और बिम्सटेक से समर्थन प्राप्त हुआ है।
- **आतंकवाद का मुकाबला:** इन संगठनों ने अंतरराष्ट्रीय आतंकवाद का मुकाबला करने और क्षेत्रीय सुरक्षा बढ़ाने में भारत की सहायता की है। सार्क ने एक क्षेत्रीय आतंकवाद विरोधी तंत्र की स्थापना की है, जबकि ब्रिक्स ने एक आतंकवाद विरोधी सहयोग कार्य समूह की स्थापना की है।

चुनौतियां

- **भू–राजनीतिक अंतर:** इन संगठनों के सदस्य देशों में अक्सर भू–राजनीतिक मतभेद होते हैं जो आम नीतियों और उद्देश्यों को लागू करने में चुनौतियां पैदा कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, भारत और चीन के बीच क्षेत्रीय विवाद रहे हैं जिसने उनके संबंधों को जटिल बना दिया है और उनके लिए इन संगठनों के भीतर सहयोग करना कठिन बना दिया है।
- **विविध आर्थिक हित:** इन संगठनों के सदस्य देशों के विविध आर्थिक हित हैं, जो सहयोग में बाधाएँ पैदा कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, भारत मुख्य रूप से आर्थिक विकास को बढ़ावा देने में रुचि रखता है, जबकि अन्य सदस्य देश सामाजिक विकास या पर्यावरणीय स्थिरता जैसे अन्य आर्थिक उद्देश्यों को प्राथमिकता दे सकते हैं।
- **राजनीतिक अस्थिरता:** इन संगठनों के कुछ सदस्य देशों ने राजनीतिक अस्थिरता या संघर्ष का अनुभव किया है, जो अन्य सदस्य देशों के साथ रचनात्मक रूप से जुड़ने की उनकी क्षमता में बाधा डाल सकता है। उदाहरण के लिए, पाकिस्तान की आंतरिक राजनीतिक अस्थिरता और भारत के साथ चल रहे संघर्ष ने सार्क के लिए सामान्य नीतियों को प्रभावी ढंग से लागू करना चुनौतीपूर्ण बना दिया है।
- **सीमित संसाधन:** इन संगठनों के कई सदस्य देशों के पास सीमित संसाधन हैं, जो सामान्य नीतियों और उद्देश्यों में पूर्ण रूप से भाग लेने और सार्थक योगदान करने की उनकी क्षमता को प्रभावित कर सकते हैं। यह संगठन के भीतर उनके प्रभाव के मामले में सदस्य देशों के बीच असमानता भी पैदा कर सकता है।
- **बाहरी दबाव:** ये संगठन अन्य वैश्विक शक्तियों के बाहरी दबावों का भी सामना कर सकते हैं जो उनकी नीतियों और उद्देश्यों को प्रभावित करना चाहते हैं। उदाहरण के लिए, सार्क और ब्रिक्स दोनों को बाहरी शक्तियों से चुनौतियों का सामना करना पड़ा है जो अपने प्रभाव को सीमित करना चाहते हैं और क्षेत्र के भीतर अपने हितों को बढ़ावा देना चाहते हैं। यह भारत के लिए अतिरिक्त चुनौतियां पैदा कर सकता है क्योंकि यह इन संगठनों के भीतर अपनी विदेश नीति के लक्ष्यों को आगे बढ़ाना चाहता है।

47. अमृत काल के लिए सरकार की परिकल्पना 'सप्तऋषि' पहल क्या है? अमृत काल का दृष्टिकोण एक सशक्त और समावेशी अर्थव्यवस्था है। कथन पर अपने विचार प्रस्तुत करें।

उत्तर हाल ही में केंद्रीय वित्त और कॉर्पोरेट मामलों की मंत्री निर्मला सीतारमण ने केंद्रीय बजट 2023–24 में अमृत काल के विजन को रेखांकित किया, जो एक सशक्त और समावेशी अर्थव्यवस्था को दर्शाएगा। उन्होंने कहा, ''हम एक समृद्ध और समावेशी भारत की कल्पना करते हैं, जिसमें विकास का लाभ सभी क्षेत्रों और नागरिकों, विशेष रूप से हमारे युवाओं, महिलाओं, किसानों, ओबीसी, अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति तक पहुँचे।'' इसी दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए सप्तऋषि; बजट 2023–24 की सात मार्गदर्शक प्राथमिकताएँ तय की गई।

अथवा

अमृत काल का विजन एक सशक्त और समावेशी अर्थव्यवस्था के दृष्टिकोण पर आधारित है। केंद्रीय वित्त मंत्री इस बात पर प्रकाश डाला है कि अमृत काल के लिए हमारे विजन में प्रौद्योगिकी चालित और ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था शामिल है जो मजबूत लोक वित्त और एक मजबूत वित्तीय क्षेत्र से युक्त है। अमृत काल का सप्तऋषि पहल सामवेशी अर्थव्यवस्था के दृष्टिकोण पर आधारित है।

सप्तऋषि पहल :– केंद्रीय वित्त मंत्री ने घोषणा की कि अमृत काल में पहला बजट सात प्राथमिकताओं द्वारा निर्देशित होगा जो एक दूसरे के पूरक हैं और 'सप्तऋषि' के रूप में कार्य करते हैं।

- समावेशी विकास
- अंतिम मिल तक पहुँचना

- अवसंरचना और निवेश
- क्षमता को उजागर करना।
- हरित विकास
- युवा शक्ति
- वित्तीय क्षेत्र

(1) **समावेशी विकास**

- इसके अंतर्गत कृषि, स्वास्थ्य, शिक्षा और कौशल को शामिल किया गया है।
- **कृषि** :– डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर : कृषि के लिए डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर को एक ओपन सोर्स, और इंटरऑपरेबल पब्लिक गुड के रूप में बनाया जाएगा।
- जिसके तहत समावेशी किसान–केंद्रित समाधान, फसल योजना के लिए प्रासंगिक सेवाएँ एवं कृषि आदानों, ऋण और बीमा तक बेहतर पहुँच, कृषि–प्रौद्योगिकी उद्योग और स्टार्च–अप का विकास समर्थन को सुनिश्चित किया जा सकता है।
- ग्रामीण क्षेत्रों में युवा उद्यमियों द्वारा कृषि–स्टार्ट अप को प्रोत्साहित करने के लिए कृषि कोष की स्थापना की जाएगी।
- बाजरा के लिए वैश्विक हब 'श्री अना' – भारतीय बाजरा अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सर्वोत्तम प्रथाओं को साझा करने के लिए उत्कृष्टता केंद्र के रूप में समर्थन दिया जाएगा।

स्वास्थ्य :–

- 157 नए नर्सिंग कॉलेज स्थापित किए जाएंगे।
- उत्कृष्टता केंद्रों के माध्यम से फार्मास्यूटिकल्स में अनुसंधान एवं विकास को बढ़ावा देने के लिए केंद्र स्थापित किया जाएगा।
- 2047 तक सिमल सेल एनीमिया को खत्म करने के लिए एक मिशन शुरू किया जाएगा।

अंतिम मील तक पहुँचना :–

- एस्पिरेशनल डिस्ट्रिक्ट्स प्रोग्राम की सफलता के आधार पर, एस्पिरेशनल ब्लॉक्स प्रोग्राम हाल ही में 500 ब्लॉकों को कवर करते हुए लांच किया गया था।
- इसका उद्देश्य स्वास्थ्य, पोषण, शिक्षा, कृषि वित्तीय समावेशन इत्यादि जैसे कई क्षेत्रों के प्रदर्शन में सुधार करना है।
- विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूहों की सामाजिक–आर्थिक स्थितियों में सुधार के लिए, प्रधानमंत्री पीवीटीजी विकास मिशन शुरू किया जाएगा।
- एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालयों के लिए 38,000 शिक्षकों और सहायक कर्मचारियों की भी भर्ती करेगा।
- पीएम आवास योजना के परिव्यय को 66% बढ़ाकर 79,000 करोड़ रूपये से अधिक किया जा रहा है।

अवसंरचना और निवेश :–

- सरकार ने बुनियादी ढाँचे में निवेश को बढ़ावा देने और उन्हें पूरक नीतिगत कार्यों को प्रोत्साहित करने के लिए राज्य सरकारों को 50 साल के ब्याज मुक्त ऋण को एक और वर्ष के लिए जारी रखने का फैसला किया है।
- रेलवे के लिए 2.40 लाख करोड़ रूपया का पूंजी प्रदान किया गया है। अबतक का सबसे अधिक परिव्यय और 2013–14 में किए गए परिव्यय का लगभग 9 गुना है।
- क्षेत्रीय हवाई संपर्क में सुधार के लिए 50 अतिरिक्त हवाई अड्डे, हेलीपोर्ट वाटर एयरोड्रोम और उन्नत लैंडिंग ग्राउंड को पुनर्जीवित किया जाएगा।
- प्रथम मिल कनेक्टिविटी के लिए 100 महत्वपूर्ण परिवहन बुनियादी ढाँचा परियोजनाओं की पहचान की गई है।
- प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्र को ऋण की कमी के उपयोग के माध्यम से एक शहरी अवसंरचना विकास निधि की स्थापना की जाएगी।

क्षमता को उजागर करना :– ''मेक ए आर्ट इन इंडिया एंड मेक AI वर्क फॉर इंडिया'' के विजन को साकार करने के लिए शीर्ष शैक्षणिक संस्थानों में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के लिए तीन उत्कृष्टता केंद्र स्थापित किए जाएंगे।

- स्टार्ट–अप्स और शिक्षाविदों द्वारा नवाचार और अनुसंधान की सुविधा के लिए, एक राष्ट्रीय डेटा शासन नीति लाई, जाएगी जो अज्ञात डेटा तक पहुँच को सक्षम करेगी।
- दस्तावेजों को ऑनलाइन सुरक्षित रूप से संग्रहीत करने और साझा करने के लिए एमएसएमई द्वारा एंटिटी डिजिलॉकर स्थापित किया जाएगा।
- न्याय के प्रभावी प्रशासन के लिए ई–अदालतों का तीसरा चरण शुरू किया जाएगा।

हरित विकास :–

- राष्ट्रीय हरित हाइड्रोजन मिशन के लिए 19,700 करोड़ रूपये का परिव्यय आवंटित किया गया है। ताकि अर्थव्यवस्था को कम कार्बन तीव्रता में परिवर्तित करने, जीवाश्म ईंधन के आयात पर निर्भरता कम करने और देश को इस उभरते हुए क्षेत्र में प्रौद्योगिकी और बाजार का नेतृत्व करने के लिए तैयार किया जा सके।
- सर्कुलर इकोनॉमी को बढ़ावा देने के लिए गोबरधन योजना के तहत 500 नए 'बेस्ट टू वेल्थ' प्लांट स्थापित किए जाएंगे।
- 4,000 mwh की क्षमता वाली बैटरी एनर्जी स्टोरेज सिस्टम को वायबिलिटी गैप फंडिंग से सपोर्ट किया जाएगा।

वित्तीय क्षेत्र :–

- वित्तीय और सहायक सूचनाओं के केंद्रीय भंडार के रूप में काम करने के लिए एक राष्ट्रीय वित्तीय सूचना रजिस्ट्री की स्थापना की जाएगी।

- एक नया विद्यायी ढांचा, जिसे RBI के परामर्श से तैयार किया गया है। इस क्रेडिट सार्वजनिक बुनियादी ढाँचे को नियंत्रित करेगा।
- आजादी का अमृत महोत्सव मनाने के लिए बचत योजना, महिला सम्मान बचत प्रमाण पत्र मार्च 2025 तक दो साल की अवधि के लिए उपलब्ध कराया जाएगा।
- वरिष्ठ नागरिक बचत योजना के लिए अधिकतम जमा सीमा 15 लाख रूपये से बढ़ाकर 30 लाख रूपये की जाएगी।

युवा शक्ति :–

- अगले 3 वर्षों के भीतर लाखों युवाओं को कौशल प्रदान करने के लिए शुरू किया गया और उद्योग 4.0 जैसे नए युग के पाठ्यक्रमों को कवर किया जाएगा।
- विभिन्न राज्यों में 30 कौशल भारत अंतर्राष्ट्रीय केंद्र स्थापित किए जाएंगे।
- राज्यों को अपने स्वयं के ODOPG1 उत्पादों के लिए अपने राज्य की राजधानी/शहरों या सबसे प्रमुख पर्यटन केंद्र में एक यूनिटी मॉल स्थापित करने के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा।

अमृतकाल : सशक्त एवं समावेशी अर्थव्यवस्था :–

- अमृतकाल का विजन–एक सशक्त और समावेशी अर्थव्यवस्था के दृष्टिकोण पर आधारित है। केंद्रीय वित्त मंत्री ने इस बात पर प्रकाश डाला कि अमृत काल के लिए हमारे विजन में प्रौद्योगिकी चालित और ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था शामिल है जो मजबूत लोक वित्त और एक मजबूत वित्तीय क्षेत्र से युक्त है।
- स्पष्ट रूप से देखे तो इस विजन को हासिल करने के लिए आर्थिक एजेंडा इन तीन प्राथमिकताओं पर ध्यान केंद्रित करता है।
- नागरिकों, विशेष रूप से युवाओं की आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए व्यापक अवसरों को उपलब्ध कराना।
- प्रगति और रोजगार सृजन के लिए मजबूत आधार उपलब्ध कराना।
- वृहद आर्थिक सुस्थिरता को मजबूत बनाना।
- केंद्रीय बजट 2023–24 का प्रमुख विषय समग्र विकास पर ध्यान केंद्रीत करना है। श्रीमती निर्मला सीतारमण ने कहा सरकार का सिद्धांत विशेष रूप से किसानों, महिलाओं, युवाओं, अन्य पिछड़े वर्गों, एससी, एसटी दिव्यांग और आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों को कवर करते हुए समावेशी विकास संभव करना है और वंचितों के लिए समग्र प्राथमिकता को भी इसमें शामिल किया गया है। योजना के तहत 500 नए 'बेस्ट टू वेल्थ' प्लांट स्थापित किए जाएंगे।
- 4,000 MWH की क्षमता वाली बैटरी एनर्जी स्टोरेज सिस्टम को वायबिलिटी गैप फंडिंग से सपोर्ट किया जाएगा।

अपना विचार :–

- निश्चित रूप से अमृत काल का बजट समावेशी आर्थिक विकास के दृष्टिकोण पर आधारित है। जहाँ सबको एक साथ लेकर चलने की बात कही गई है।
- देश में बुनियादी सुविधाओं को विकसित करने के लिए बजट में अत्यधिक बजटीय आवंटन किया गया है, जिससे देश में आर्थिक विकास को गति मिलेगी।
- हरित ऊर्जा के विकास से भारत का cop-27 के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाता है जिससे देश एवं विश्व में स्वस्थ ऊर्जा का विकास होगा। एवं जलवायु परिवर्तन को नियंत्रित किया जा सकता है।
- सप्तऋषि कार्यक्रम या पहल के माध्यम से देश के 7 बिंदुओं के अंदर देश के विकास को सुनिश्चित किया गया है, जहाँ युवाओं का विकास, स्वास्थ्य कृषि इत्यादि शामिल किया गया है।
- समावेशी विकास को सुनिश्चित करने हेतु वित्तीय समावेशन को बढ़ावा दिया जा रहा है, जिससे देश में सतत् विकास को सुनिश्चित किया जा सके।

48. प्रधानमंत्री आयुष्मान भारत स्वास्थ्य अवसंरचना मिशन के प्रमुख घटकों को बताएँ साथ ही भारत में हेल्थकेयर इंफ्रास्ट्रक्चर का समालोचनात्मक परिक्षण करें। हेल्थकेयर से संबंधित हालिया सरकारी पहलों की चर्चा करें।

उत्तर प्रधानमंत्री आयुष्मान भारत स्वास्थ्य अवसंरचना मिशन 64180 करोड़ रूपये के परिव्यय के साथ, 2021–22 के बजट में घोषित किया गया था। वह सबसे बड़ी अखिल भारतीय स्वास्थ्य अवसंरचना योजना है जिसका उद्देश्य उभरते सार्वजनिक स्वास्थ्य मुद्दों पर ध्यान देने के लिए भारत की क्षमता को एक बहुत ही आवश्यक प्रोत्साहन प्रदान करना है। यह भारत के स्वास्थ्य सेवा के बुनियादी ढाँचे में एक आदर्श बदलाव आएगा तथा इसे और अधिक मजबूती प्रदान करेगा।

अथवा

महात्मा बुद्ध ने कहा है ''शरीर के स्वास्थ्य को अच्छा रखना हमारा कर्तव्य है, अन्यथा हम अपने मन को मजबूत और स्पष्ट पहचानने में सक्षम नहीं होंगे।'' इस कथन के संदर्भ में भारत सरकार ने देश में स्वास्थ्य बुनियादी सुविधा उपलब्ध करने में प्रधानमंत्री आयुष्मान भारत स्वास्थ्य अवसंरचना विकास का उपयोग किया है, जिसका मुख्य उद्देश्य देश में वहनीय एवं सुरक्षित स्वास्थ्य सुविधा उपलब्ध करना तथा बुनियादी सुविधा के विकास हेतु व्यय को बढ़ाना।

पीएम आयुष्मान भारत हेल्थ इंफ्रास्ट्रक्चर मिशन एवं प्रमुख घटक

- पीएम आयुष्मान भारत हेल्थ इंफ्रास्ट्रक्चर मिशन हेल्थकेयर इंफ्रास्ट्रक्चर को मजबूत करने के लिए सबसे बड़ी अखिल भारतीय स्वास्थ्य

योजनाओं में से एक है।

- देशभर में व्यापक स्वास्थ्य सेवा के दृष्टिकोण को पूरा करने के लिए इसे 25 अक्टूबर 2021 को लांच किया गया था। पीएम आयुष्मान भारत हेल्थ इंफ्रास्ट्रक्चर मिशन की घोषणा बजट 2021–22 में 64,180 करोड़ रूपये के साथ की गई थी।

उद्देश्य :– सार्वजनिक स्वास्थ्य बुनियादी ढाँचे में महत्वपूर्ण अंतराल को भरने के लिए, विशेष रूप से शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों में महत्वपूर्ण देखभाल हेतु सुविधाएं उपलब्ध कराना।

- ब्लॉक, जिला, क्षेत्रीय और राष्ट्रीय स्तर पर निगरानी के नेटवर्क के माध्यम से एक आईटी–सक्षम रोग निगरानी प्रणाली की स्थापना की जाएगी।
- सभी सार्वजनिक स्वास्थ प्रदाताओं को एकीकृत स्वास्थ्य सूचना पोर्टल के माध्यम से जोड़ा जाएगा, जिसका विवरण सभी राज्य और केंद्र शासित प्रदेशों में किए जाएंगे।
- कोविड–19 और अन्य संक्रामक रोगों पर अनुसंधान का विस्तार और जानवरों और मनुष्यों में संक्रामक रोग के प्रकोप को रोकने, पता लगाने और प्रतिक्रिया करने के लिए एक स्वास्थ्य दृष्टिकोण प्रदान करने की मूल क्षमता विकसित करना।

प्रमुख घटक/अवयव :–

- पीएम आयुष्मान भारत स्वास्थ्य अवसंरचना मिशन में केंद्र प्रायोजित घटक एवं कुछ केंद्रीय क्षेत्र घटक शामिल है।
- **केंद्र प्रायोजित घटक (2021–22 से 2025–26) तक**
- आयुष्मान भारत :– ग्रामीण क्षेत्र स्वास्थ्य और कल्याण केंद्र
- 7 उच्च फोकस राज्यों में 17788 उप–स्वास्थ्य केंद्रों के लिए बुनियादी ढाँचे के विकास के लिए समर्थन प्रस्तावित है।

आयुष्मान भारत–शहरी

- इस घटक के तहत देशभर में 11044 शहरी स्वास्थ्य और कल्याण केंद्रों के लिए सहायता उपलब्ध कराई जाएगी।
- **ब्लॉक पब्लिक हेल्थ यूनिट्स** :– 11 उच्च फोकस राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों (असम, बिहार, छतीसगढ़, हिमाचल, UT, जम्मू और काश्मीर, झारखंड, म. प्र. ओडिसा आदि।) में 3382 ब्लॉक पब्लिक हेल्थ यूनिट्स के लिए सहायता प्रदान की जाएगी।
- सभी जिलों में एकीकृत जिला वन स्वास्थ्य प्रयोगशालाएँ।
- संक्रमक रोगों और प्रकोप प्रतिक्रिया की निगरानी को मजबूत करना :– 20 मेट्रोपॉलिटन निगरानी ईकाईयों, 5 नए क्षेत्रीय NCDC के लिए समर्थन और सभी राज्यों में एकीकृत स्वास्थ्य सूचना मंच का क्रार्यन्वयन।
- प्रवेश के बिंदुओं पर निगरानी क्षमता को मजबूत किया जाएगा इसमें 17 नए बिंदुओं के लिए सहायता और 33 मौजूदा इकाइयों को सुदृढ़ बनाना।
- केंद्रीय क्षेत्र के घर को मौजूदा प्रक्रिया का पालन करते हुए केंद्रीय एजेंसियों/अधीनस्थ कार्यालयों/स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग और स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग के तहत स्वायत्त निकायों द्वारा कार्यान्वित किया जाएगा।
- यह केंद्र प्रायोजित योजना और कुछ केंद्रीय क्षेत्र के घटकों के साथ लागू किया गया है।

भारत में हेल्थकेयर इंफ्रास्ट्रक्चर :–

- राष्ट्रीय स्वास्थ्य लेखा (National Health Accounts - NHA). तकनीकी सचिवालय ने वर्ष 2017–18 के लिए राष्ट्रीय स्वास्थ्य लेखा रिपोर्ट जारी की थी।
- इस रिपोर्ट में बताया गया है कि यह सकल घरेलू उत्पाद के प्रतिशत के रूप में स्वास्थ्य पर कुल सर्वजनिक व्यय में वृद्धि को दर्शाता है।
- रिपोर्ट में यह भी बताया गया है कि कुल स्वास्थ्य व्यय के हिस्से के रूप में आउट–ऑफ–पॉकेट एक्सपेंडिचर 50% से कम हो गया है।
- ये सुधार निश्चित ही सराहनीय है, लेकिन भारत के सार्वजनिक व्यय की स्थिति अभी भी दयनीय बनी हुई है।

सामालोचनात्मक परिक्षण :–

सार्वजनिक व्यय में वृद्धि :–

- NHA के रिपोर्ट के अनुसार सरकार ने स्वास्थ्य पर व्यय में वृद्धि की है, जिससे आउट–ऑफ–पॉकेट एक्सपेंडिचर वर्ष 2017–18 में घटकर 48.8% हो गया जो वर्ष 2013–14 में 64.2% के स्तर पर रहा था।
- वस्तुतः यह व्यय दर्शाता है कि सकल घरेलू उत्पाद के प्रतिशत के रूप में स्वास्थ्य पर कुल सार्वजनिक व्यय पूर्व में अधिकतम 1–1.2% से आगे बढ़ता हुआ सकल घरेलू उत्पाद के 1.35% के ऐतिहासिक उच्च स्तर तक पहुँच गया है।
- वर्तमान में बजट–व्यय में खासा वृद्धि नहीं हुआ है। स्वास्थ्य व्यय का दर पूर्वर्ती है, लेकिन सार्वजनिक व्यय बढ़ने से देश के इंफ्रास्ट्रक्चर में सुधार हुआ है।

प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल की हिस्सेदारी :–

- वर्तमान सरकारी स्वास्थ्य व्यय में प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल की हिस्सेदारी वर्ष 2013–14 में 51.1% से बढ़कर वर्ष 2017–18 में 54.7% हो गई थी।
- वर्तमान सरकारी स्वास्थ्य व्यय का 80% से अधिक प्राथमिक और माध्यमिक देखभाल पर किया जा रहा है।

स्वास्थ्य पर सामाजिक सुरक्षा व्यय

- समाज पर सामाजिक सुरक्षा व्यय (जिसमें सामाजिक स्वास्थ्य बीमा कार्यक्रम, सरकार द्वारा वित्तपोषित स्वास्थ्य बीमा योजनाएँ और सरकारी कर्मचारियों को भी चिकित्सा प्रतिपूर्ति शामिल है) की हिस्सेदारी में वृद्धि हुई है।
- इसके अलावा इसमें कुछ समस्या भी विद्यमान है।

स्वास्थ्य पर व्यय अभी भी अपेक्षाकृत कम :–

- GDP के प्रतिशत के रूप में या प्रति व्यक्ति स्वास्थ्य पर भारत का कुल सार्वजनिक व्यय अभी भी विश्व में न्यूनतम में से एक है।
- यद्यपि इसे GDP के कम से कम 2.5% तक बढ़ाने के लिए एक दशक से अधिक समय से नीतिगत सहमती रही है। लेकिन इस दिशा में अबतक कोई उल्लेखनीय वृद्धि नहीं हो पाई है।

महिला एवं बाल स्वास्थ्य को कम प्राथमिकता :–

- प्रजनन आयु वर्ग की महिलाओं और पाँच वर्ष से कम आयु के बच्चों के स्वास्थ्य को DMS के दायरे में शामिल परिवारों की तुलना में कम प्राथमिकता दी गई।
- इसके अलावा, सरकारी व्यय के अंतर्गत वर्तमान स्वास्थ्य व्यय का हिस्सा 77.9% से घटकर 71.9% हो गया है।
- राज्य सरकारों को सौंपे गए प्राधिकारों की कमी : भारत में स्वास्थ्य राज्य सूची का विषय है और राज्य का व्यय सभी सरकारी स्वास्थ्य व्यय का लगभग 68.6% है।

हेल्थकेयर से संबंधित सरकारी पहलें :–

आयुष्मान भारत :– राष्ट्रीय स्वास्थ्य सुरक्षा मिशनः–आयुष्मान भारत या 'स्वस्थ भारत' सार्वभौमिक स्वास्थ्य कवरेज की दृष्टि को प्राप्त करने के लिए राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति के हिस्से के रूप में शुरू किया गया। आयुष्मान भारत स्वास्थ्य सेवा वितरण के क्षेत्रीय और खंडित दृष्टिकोण से व्यापक आवश्यकता आधारित स्वास्थ्य देखभाल सेवा की ओर बढ़ने का एक प्रयास है। इसका लक्ष्य प्राथमिक, माध्यमिक और तृतीय स्तर पर समग्र रूप से स्वास्थ्य को संबोधित करने के लिए पथ प्रवर्तक हस्तक्षेप करना है।

जननी शिशु सुरक्षा :–

- नवजात शिशुओं को स्वास्थ्य की सुविधाएँ न मिलने के कारण मृत्यु की समस्या का निवारण करने के लिए स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय ने बेहतर स्वास्थ्य सुविधा प्रदान करने हेतू इसकी शुरूआत की।
- **प्रधानमंत्री स्वास्थ्य सुरक्षा योजना** :– इसका उद्देश्य सामान्य रूप से देश के विभिन्न हिस्सों में सस्ती स्वास्थ्य सुविधाओं की उपलब्धता में असंतुलन को ठीक करना और विशेष रूप से कम सेवा वाले राज्यों में गुणवत्तापूर्ण चिकित्सा शिक्षा के लिए सुविधाओं को बढ़ाना है।
- **मिशन इंद्रधनुष** :– भारत सरकार ने केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय ने सभी बच्चों को टीकाकरण के अंतर्गत लाने के लिए 'मिशन इंद्रधनुष' की शुरूआत 25 दिसंबर 2014 को की थी। इसका मुख्य उद्देश्य उन बच्चों का टीकाकरण करना है, जिन्हें टीके नहीं लगे हैं।
- **केंद्रीय सरकार स्वास्थ्य योजना** :– यह स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा संचालित एक स्वास्थ्य योजना है। यह केन्द्र सरकार के कर्मचारियों, पेंशनभोगियों और उनके आश्रितों को पूर्ण स्वास्थ्य देखभाल प्रदान करती है। इसके तहत प्रत्येक केंद्रीय कर्मचारी को एक सीजीएचएस कोड मिलता है।

आगे की राह :–

- **स्वास्थ्य देखभाल में अधिक सार्वजनिक निवेश** :– विभिन्न विकासशील देशों के अनुभव से पता चलता है कि जैसे–जैसे स्वास्थ्य पर सार्वजनिक व्यय बढ़ता है, देखभाल सुविधाओं का उपयोग भी बढ़ता है।
- सार्वजनिक निवेश में वृद्धि के साथ स्वास्थ्य देखभाल सुविधा अधिक सस्ती और वहनीय हो जाएगी और इसके परिणामस्वरूप लोग स्वास्थ्य सेवा तक अधिक पहुँच प्राप्त करेंगे।
- शहरी स्थानीय निकायों को सुदृढ़ बनाने की आवश्यकता है, भारत की स्वास्थ्य प्रणाली को अधिक सरकारी वित्तपोषण की आवश्यकता है, ताकी शहरी स्वास्थ्य में सुधार हो।
- **निवेश की आवश्यकता** :– नए–नए मेडिकल कॉलेजों में निवेश को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए ताकि लागत को कम किया जा सके और स्वास्थ्य सेवाओं की गुणवत्ता में सुधार लाया जा सके।

स्वास्थ्यकर्मीयों को प्रशिक्षण की आवश्यकता :–

- लोगों को प्रस्तावित स्वास्थ्य सुविधाएँ प्रदान करने हेतु विद्यमान स्वास्थ्य देखभाल कार्यबल को तैयार कर सकने के लिए उनके प्रशिक्षण, पुर्नप्रशिक्षण और ज्ञान उन्नयन पर प्रमुखता से ध्यान देना महत्वपूर्ण है।

49 (क) मध्य पूर्व–एशिया की बदलती भू–राजनीतिक व्यवस्था।

उत्तर मध्य–पूर्व एशिया क्षेत्र विभिन्न जातियों, संस्कृतियों और धर्मों का एक जटिल मिश्रण है, जो इसे भू–राजनीतिक स्थिरता के लिए एक चुनौतीपूर्ण क्षेत्र बनाता है। ऐतिहासिक रूप से, इस क्षेत्र ने कई संघर्षों और युद्धों को देखा है जिन्होंने इसके राजनीतिक परिदृश्य को आकार दिया है। हालांकि, पिछले कुछ वर्षों में इस क्षेत्र की भू–राजनीतिक प्रणाली में कई नए विकास और रूझान उभरने के साथ महत्वपूर्ण बदलाव देखे गए हैं। वर्तमान समय में धार्मिक संकटों एवं धर्म में अवांछनीय तत्वों ने मध्य–पूर्व के भू–राजनीतिक व्यवस्था सबसे ज्यादा प्रभावित किया है।

मध्य–पूर्व एशिया और भू–राजनीतिक व्यवस्था :–

- मध्य पूर्व एशिया की भू–राजनीतिक प्रणाली में सबसे महत्वपूर्ण परिवर्तनों में से एक ईरान का एक क्षेत्रीय शक्ति के रूप में उदय है। इस क्षेत्र में ईरान का बढ़ता प्रभाव विभिन्न समूहों और सरकारों के समावेशन के साथ–साथ सीरियाई गृहयुद्ध और जर्मनी गृहयुद्ध जैसे क्षेत्रीय संघर्षों में इसकी भागीदारी के कारण है।
- ईत्सी सरकार का परमाणु कार्यक्रम और इसके बाद विश्व शक्तियों के साथ समझौता भी क्षेत्रीय और वैश्विक राजनीति का एक प्रमुख केंद्र रहा है।
- हाल ही में महिलाओं की आजादी को लेकर ईरान में काफी संकट नजर आया। हिजाब को लेकर महिलाओं का विरोध प्रदर्शन जारी

है, जबकि सरकारी मशीनरी अपनी रूढ़ीवादी विचारधारा पर अड़ी हुई है।

- सीरिया और यमन में चल रहे संघर्षों में भी क्षेत्र की भू–राजनीतिक प्रणाली को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। विभिन्न क्षेत्रीय और वैश्विक शक्तियों की भागीदारी ने संघर्षों को युद्धों में बदल दिया है, जिसमें शामिल विभिन्न देशों के बीच तनाव बढ़ गया है। संघर्षों ने लाखों लोगों के विस्थापन का भी नेतृत्व किया है, जिससे मानवीय संकट पैदा हुआ है जो इस क्षेत्र को प्रभावित करते रहे हैं।
- आईएस और अल कायदा जैसे का उदय भी क्षेत्र की भू–राजनीतिक प्रणाली में एक महत्वपूर्ण कारक रहा है। इन समूहों ने सरकारों को अस्थिर करने और अराजकता पैदा करने के लिए हिंसा और आतंक का इस्तेमाल किया है, जिसके कारण आतंकवाद का मुकाबला करने में सैन्य हस्तक्षेप और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग बढ़ा है।
- इसके अलावा क्षेत्र की बदलती ऊर्जा गतिकी में बदलती भू–राजनीतिक व्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। कतर और इजराइल जैसे देशों में विशाल तेल और गैस भंडार की खोज में पारंपरिक तेल उत्पादक देशों के प्रभुत्व को चुनौती दी है और नए गठजोड़ और आर्थिक साझेदारी बनाई है।
- हालांकि वर्तमान समय में आर्थिक आवश्यकता के कारण मध्य–पूर्व एशिया में नवाचार को बढ़ावा दिया जा रहा है तथा अपने कानूनी व्यवस्था में शहरीकरण को शामिल किया जा रहा है।
- भू–राजनीतिक नए–नए परिवर्तन जैसे अनेक देशों के साथ संबंधों को स्थापित किया जा रहा है।
- भारत सबसे ज्यादा तेल ईरान से खरीदता था हालांकि अभी रूस–यूक्रेन एवं अमेरिका के प्रतिबंध से आंकड़ा कम हो गया है, लेकिन मध्य–पूर्व एशिया भारतीय सुरक्षा एवं सामाजिक दृष्टि का महत्व रखता है। हाल ही में इजरायल के साथ संबंधों को 25 साल पूरे हुए थे।

निष्कर्षः मध्य–पूर्व एशिया क्षेत्र अपनी भू–राजनीतिक प्रणाली में महत्वपूर्ण परिवर्तन देख रहा है। ईरान का उदय, बाहरी शक्तियों की बढ़ती भागीदारी, चल रहे संघर्ष, गैर–राज्य अभिनेताओं का उदय, और ऊर्जा गतिशीलता में बदलाव, ये सभी कारक हैं जिन्होंने बदलते परिदृश्य में योगदान दिया है। इसके बावजूद भी ये क्षेत्र स्थायी शांति और समृद्धि प्राप्त करने के लिए सहयोग और सहयोग के अवसर भी प्रस्तुत करते हैं।

(ख) बिहार में महिला सशक्तिकरण में 'जीविका' कार्यक्रम के महत्व।

उत्तर लोकतांत्रिक समाज के ढाँचे में हमारे नियम–कानून, विकासमूलक नीतियों, योजनाओं और कार्यक्रमों का इरादा विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं की उन्नति करना है। पांचवी पंचवर्षीय योजना से महिला संबंधी दृष्टिकोण में कल्याण से विकास के रूप में बदलाव आया। बिहार महिला सशक्तिकरण हेतु 'जीविका' रामबाण का काम किया है। महिलाओं के लिए आर्थिक आत्मनिर्भरता एवं स्वतंत्रता का एक समयन्वित मंच उपलब्ध कराता है। तथा स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से एक श्रृंखला निर्माण की प्रक्रिया को पूरा किया है।

जीविका एवं महिला सशक्तिकरण :–

- 'जीविका' के नाम से मशहूर ग्रामीण आजीविका प्रोत्साहन समिति ग्रामीण विकास के तत्वधान में निबंधित संस्था है। यह संस्था बिहार के ग्रामीण विकास विभाग के तत्वाधान में निबंधित संस्था है। यह संस्था ग्रामीण विकास के साथ–साथ महिला सशक्तिकरण हेतु मुख्य भूमिका निभाया है।
- सितंबर–2022 तक जीविका के तहत 10.35 लाख स्वयं सहायता समूह गठित हुए थे जिनमें 2.45 लाख समूहों का बैंकों के साथ ऋण संपर्क है। अभी बैंक ऋण 5574 करोड़ रू है।
- **दीदी की रसोई :–** जीविका के तहत दीदी की रसोई समुदाय संचालित केंद्रीय मॉडल है। अस्पतालों के रोगियों, बैंक के कर्मचारियों स्कूली विद्यार्थियों आदि के गुणवत्तापूर्ण भोजन देने के मामले में यह उद्यम के सफल मॉडल के रूप में उभरा है। यह बिहार के महिलाओं के लिए आर्थिक आत्मनिर्भरता का एक महत्वपूर्ण उदाहरण प्रस्तुत करता है।
- **ग्रामीण बाजार :–** जीविका ने ग्रामीण बाजार उद्यम का एक मॉडल प्रस्तुत किया है, जो किराना दूकान चलाने वाले स्वयं सहायता समूह सदस्यों को उचित दर पर किराना के गुणवत्तापूर्ण सामान उपलब्ध कराता है। ग्रामीण बाजार–सूक्ष्म–उद्यमियों को उनका व्यापार बढ़ाने में सहायता करता है। इससे महिलाओं को अपने वस्तु का उचित कीमत मिल सकेगा।
- **दीदी की सिलाई :–** दिदी की रसोई के तर्ज पर दीदी की सिलाई कार्यक्रम चलाया गया है। सिलाई के क्षेत्र में रोजगार के मौके उपलब्ध कराने के लिए जीविका ने 15 फरवरी 2022 को अपना पहला सिलाई प्रशिक्षण एवं उत्पादन केंद्र मुंगेर में शुरू किया है।
- **कृषि उद्यमी :–** जीविका का कृषि उद्यमी मॉडल उच्च गुणवत्ता वाली लागत सामग्रियों की उपलब्धता, फसल संबंधी सलाह, घर–घर जाकर वित्तीय लेनदेन, और बिक्री के लिए अधिशेष कृषि उत्पादों का संग्रह जैसी कृषि आधारित सेवाओं के जरिए स्थायी युवाओं के सशक्तीकरण का एक और तरीका है। इससे कृषि में महिलाओं की संलग्ता में वृद्धि की है साथ ही कृषि क्षेत्र को एक आय के रूप में रूपांतरित कर महिला अधिकारों को प्रेरित किया है।
- **वित्तीय समावेशन :–** जीविका ने महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में वित्तीय समावेशन को शामिल कर एक मिल का पत्थर साबित किया है। वित्तीय समावेशन का विचार स्वयं सहायता समूहों के बैंकों के साथ ऋण–संपर्क, बीमा योजना के तहत स्वयं सहायता समूह के सदस्यों को वित्तीय लेनदेन, इत्यादि के लिए प्रेरित किया है। इससे ग्रामीण महिलाओं में बचत की आदत लग गई है , जिससे महिला सशक्त हुई है।

निष्कर्षः यह कहने में कोई अतिशशोक्ति नहीं होगी कि महिला सशक्तिकरण में जीविका ने मूल–चूल परिवर्तन किया है तथा महिलाओं में आर्थिक, स्वतंत्रता, एवं आत्मनिर्भरता की भूख बढ़ा दी है। इसके महत्व को देखते हुए विश्व बैंक ने 'जीविका' की सराहना किया था।

(ग) LIGO-India कार्यक्रम।

उत्तर हाल ही में भारत सरकार ने 'लेजर इंटरफेरोमीटर ग्रेविटेशनल वेव ऑब्जर्वेटरी परियोजना के निर्माण को मंजूरी दिया है। यह परमाणु ऊर्जा विभाग और विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग अमेरिकी राष्ट्रीय विज्ञान प्रतिष्ठान और कई अन्य राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय अनुसंधानों के साथ मिलकर बनाया जाएगा। परियोजना का उद्देश्य ब्रह्मांड के गुरूत्वीय छाया का पता लगाना है। यह महाराष्ट्र के हिंगोली जिले में स्थित होगा। इससे भारतीय अनुसंधान में फायदा मिलेगा।

LIGO-India कार्यक्रम :–

- LIGO–गुरूत्वाकर्षण का पता लगाने वाली एक अंतर्राष्ट्रीय नेटवर्क है। लीगों को दूरी में परिवर्तन को जीवंत करने के लिए डिजाइन किया गया है, उसी अनुपात में इसकी पंक्तियों के तुलना में छोटे परिणाम के कई क्रमों को सम्मलित किया जा सकता है। गुरूत्वाकर्षण की अत्यंत कम शक्ति के कारण ऐसे उच्च विद्युत उपकरण की आवश्यकता होती है जो उनकी पहचान को बहुत काबिल बना देते हैं।
- अमेरिका में LIGO ने पहली बार वर्ष 2015 में गुरूत्वीय छाया का पता लगाया जिस कारण वर्ष 2017 में इसे भौतिक नोबेल पुरस्कार मिला।
- **महत्व** :– यह योजना नेटवर्क का पांचवा अस्तित्व और भारत का एक विशिष्ट अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक प्रयोग में शामिल होगा। यह भारत को एक अनूठा बना देगा जो क्वांटम और ब्रह्मांड के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी की सीमाओं को एक साथ लाएगा।
- लिगो इंडिया ट्रांसमिटेड वेव्स द्वारा निकाली गई जानकारी भौतिक और खगोल विज्ञान के अनसुलझे सवालों और रहस्यों को सुलझाने में मदद करेगी।
- यह भारतीय वैज्ञानिक समुदाय को गुरूत्वाकर्षण तरंग खगोल विज्ञान के उभरते अनुसंधान क्षेत्र में एक प्रमुख खिलाड़ी में मदद करेगा।
- परियोजना की उच्च–स्तरीय इंजीनियरिंग आवश्यकताओं की दूनिया की सबसे बड़ी अल्ट्रा–हार्ट वैक्यूम सुविधा, शैक्षणिक अनुसंधान संस्थानों के सहयोग से भारतीय उद्योगों के लिए अभूतपूर्व अवसर प्रदान करेंगी।
- लिगो इंडिया परियोजना की बहु–विषयक प्रकृति प्रकाशिकी, लेजर, गुरूत्वाकर्षण भौतिकी, खगोल विज्ञान और खगोल भौतिकी, ब्रह्मांड विज्ञान, कम्प्यूटेशनल विज्ञान गणित और इंजीनियरिंग की विभिन्न शाखाओं जैसे विभिन्न क्षेत्रों के वैज्ञानिकों और इंजीनियरों को एक साथ लाने का अवसर प्रदान करेगी।

भारत के लिए महत्व :–

- भारत में अत्याधुनिक परियोजना रूचि के लिए एक स्थानीय फोकस के रूप में काम कर सकती है और छात्रों और युवा वैज्ञानिकों को प्रेरित कर सकती है।
- भारत को सबसे विशिष्ट अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक प्रयोगों से किसी एक सबमिशन अंग बनाने के अतिरिक्त लीगो–इंडिया प्रोजेक्ट से भारतीय विज्ञान को कई लाभ होंगे।
- वेधशाला से विज्ञान और खगोल भौतिकी में उल्लेखनीय प्रगति के साथ–साथ भारतीय अनुसंधान और महत्वपूर्ण राष्ट्रीय हाइलाइट्स क्षेत्रों में आगे बढ़ने की उम्मीद है।

निष्कर्ष: LIGO-India परियोजना एक महत्वकांक्षी योजना है, जिससे भारत ही नहीं बल्कि पूरे विश्व को अनुसंधान के क्षेत्र में फायदा मिलेगा। भारत में यह कार्यक्रम भारत को अंतर्राष्ट्रीय मंच उपलब्ध कराएगा तथा भारत में अनुसंधान, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी को बढ़ावा देगा।

50 (क) ''सात निश्चय योजनाएँ युवा वर्ग और महिला उत्थान पर विशेष ध्यान केंद्रीत करता है।'' कथन का मूल्यांकन करें।

उत्तर बिहार में विकास को बढ़ावा देने के लिए सरकार लगातार प्रयास कर रही है। इसी संदर्भ में मुख्यमंत्री नीतिश कुमार ने सात निश्चय योजना की शुरूआत 2015 में की थी जिसका मुख्य उद्देश्य बिहार राज्य को आत्मनिर्भर बनाना था। वर्तमान में नीतिश कुमार ने सात निश्चय–2 योजना को लांच किया जिसके द्वारा राज्य में गुणवत्तापूर्ण विकास को सुनिश्चित किया जा सके। सात निश्चय योजना के द्वारा 7 बुनियादी ढाँचा को मुख्य बिंदु बनाया जाता है, तथा इसके अंतर्गत बुनियादी सुविधाओं को विकसित करने का लक्ष्य निर्धारित किया जाता है।

सात निश्चय योजना :– सात निश्चय योजना का मूल उद्देश्य बिहार राज्य के सभी वर्गों को आत्मनिर्भर बनाना है। साथ ही बिहार राज्य सरकार बिहार की सभी चीजों को बेहतर बनाने के लिए निरंतर प्रयास कर रही है।

सात निश्चय प्रथम :–

- 2015 में बिहार के मुख्यमंत्री द्वारा सात निश्चय योजना की शुरूआत की इसके तहत 7 संकल्प या सात लक्ष्य को निर्धारित किया गया। जिसमें मुख्य ध्यान युवा एवं महिलाओं के विकास पर सुनिश्चित था।
- 'आर्थिक हल युवाओं को बल' इस संकल्प का एक महत्वपूर्ण अंग है। जिसके द्वारा बिहार के छात्रों को आर्थिक विकास हेतु ध्यान दिया जाता है।
- इसमें छात्र क्रेडिट कार्ड योजना बिहार, रोजगार, निश्चय स्वयं सहायता योजना और कुशल युवा कार्यक्रम शामिल है। यह बिहार के युवाओं के कौशल विकास और रोजगार सृजन पर भी ध्यान केंद्रित करता है।
- इसके तहत 15 से 25 वर्ष के आयु वर्ग के छात्र जो अपना इंटरमीडिएट पास कर लेते हैं, वे खुद को आगे बढ़ाने के लिए पाठ्यक्रमों में शामिल हो सकते है।
- वहीं महिलाओं के उत्थान के लिए 'आरक्षित रोजगार महिलाओं का अधिकार' यह राज्य में महिलाओं की स्थिति को मजबूत करने से संबंधित है।
- इसके तहत महिला साक्षरता को सरकारी नौकरी में आवेदन करने के लिए प्रचार किया जाता है और सरकारी नौकरियों में महिलाओं को 35% आरक्षण का प्रवधान किया गया है।
- इसके अलावा सामाजिक सुरक्षा और विकास विभाग, ग्रामीण विकास विभाग और स्वास्थ विभाग अपने बजट का लगभग आधा हिस्सा महिला सशक्तिकरण और विकास पर खर्च करते है।

सात निश्चय – 2 :–

- सात निश्चय – 2 की शुरूआत 2021 में नितिश सरकार द्वारा शुरू किया गया। इसका मुख्य उद्देश्य बिहार राज्य को विकास की ओर

ऊँचाइयों पर पहुँचाना है। इस योजना में युवाओं एवं महिलाओं के विकास को ध्यान में रखते हुए नीतियाँ बनाई गई है।

युवा शक्ति बिहार की प्रगति :– सात निश्चय पार्ट–2 में नीतिश कुमार ने पहली प्राथमिकता युवा शक्ति बिहार की प्रगति को दी है। इसके अंतर्गत उच्च शिक्षा के लिए स्टूडेंट क्रेडिट कार्ड योजना, कंप्यूटर प्रशिक्षण, संवाद कौशल और व्यवहार कौशल का वादा किया गया है।

- साथ ही प्रत्येक आईटीआई और पॉलीटेक्निक संस्थानों में प्रशिक्षण की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए उच्चस्तरीय सेंटर ऑफ एक्सीलेंस बनाने की योजना है।
- वहीं महिला सशक्तिकरण हेतु सशक्त महिला सक्षम महिला को शामिल किया गया है; सात निश्चय पार्ट–2 में दूसरा महत्व सशक्त महिला सक्षम महिला को दिया गया है। इसके तहत महिलाओं को सशक्त तथा सक्षम बनाने की योजना है।
- महिलाओं में उद्यमिता बढ़ाने के लिए विशेष योजना लाई गई है, परियोजना लागत को 50% अथवा अधिकतम 5 लाख रूपये तक ब्याज मुक्त ऋण दिए जाएंगे।
- साथ ही उच्चतर शिक्षा के लिए महिलाओं को प्रेरित करने के उद्देश्य से डेटा पास करने पर 25 हजार और ग्रेजुएट होने पर 50 हजार रूपए की आर्थिक सहायता दी जाएगी।

मूल्यांकन :– सात निश्चय योजना या संकल्पना निश्चित तौर पर यह बिहार के लिए प्रगतिशील कदम है। जिसके तहत विकास को सुनिश्चित किया जा सकता है।

- युवाओं एवं महिलाओं के विकास हेतु सरकार ने अनेक कार्यक्रम चलाए हैं जैसे महिला उद्यमिता योजना स्टूडेंट क्रेडिट कार्ड योजना इत्यादि।
- इन योजनाओं के माध्यम से राज्य में युवा एवं महिला विकास को सुनिश्चित किया जा रहा है। महिलाओं के विकास हेतु राज्य में सरकारी नौकरियों हेतु आरक्षण की व्यवस्था भी की गई है।
- स्पष्टतः सरकार द्वारा शुरू किया गया कार्यक्रम सात निश्चय निश्चित तौर पर विकासशील है, लेकिन इसको धरातल स्तर लागू करने की आवश्यकता है।
- हर साल इस कार्यक्रम को ऑडिट कराने की आवश्यकता है, जिससे आउट पुट का पता चल सके तथ प्रभावी बनाने में इसे प्रयोग किया जाए।

(ख) G-20 की अध्यक्षता भारत के आर्थिक हितों को कैसे प्रभावित करेगा चर्चा करें।

उत्तर विदेश मंत्रालय द्वारा एक अधिसूचना के माध्यम से बताया की भारत वर्ष 2023 में नई दिल्ली में G-20 समूह के नेताओं के शिखर सम्मेलन की मेजबानी करेगा। 17वां G-20 शिखर सम्मेलन नंबर 2022 में इंडोनेशिया में हुआ था जिसके बाद भारत दिसंबर, 2022 से G-20 की अध्यक्षता ग्रहण की थी। भारत एक साल के लिए इस G-20 की अध्यक्षता का कार्यभार संभाला है।

G-20 समूह :–

- G-20 की शुरूआत 1999 के दशक के अंत में वित्तीय संकट की शुरूआत हुई थी, जिसने विशेष रूप से पूर्वी एशिया और दक्षिण–पूर्व एशिया को प्रभावित किया था। इससे निकलने के लिए इस संस्था की शुरूआत हुई।
- इसका उद्देश्य मध्यम आय वाले देशों को शामिल करके वैश्विक वित्तीय स्थिरता को सुरक्षित करना है।
- G-20 देशों में दुनिया की 60% आबादी, वैश्विक व्यापार का 80% शामिल है।

G-20 बना भारत द्वारा अध्यक्षता :–

- G-20 की अध्यक्षता प्रत्येक वर्ष सदस्यों के बीच राष्ट्रीय रूप से प्रदान की जाती है। और अध्यक्ष पद पर बने रहने वाले देश में पिछले और अगले अध्यक्ष के साथ मिलकर G-20 घोषणा की गारंटी देने के लिए 'ट्रोइका' बनाता है।
- भारत द्वारा इस वर्ष G-20 की अध्यक्षता कर रहा है जिसका अपना महत्व है, जिसका प्रभाव भारत पर विविध रूप में भारत पर पड़ेगा। जिसमें भारत का आर्थिक हितों पर प्रभाव महत्वपूर्ण है।

भारत के आर्थिक हितों पर G-20 का प्रभाव :–

- भारत एक उभरती हुई अर्थव्यवस्था तथा एक विकासशील देश है, ऐसे में इतने बड़े संगठन (G-20) की अध्यक्षता से भारत के आर्थिक क्षेत्र को आगे बढ़ाएगा।

निवेश में बढ़ोतरी :–

- G-20 के मिटींग से भारत में निवेश बढ़ेगा, क्योंकि भारत एक बड़ा बाजार के रूप में उभरा है, ऐसे में यहाँ निवेश आकर्षित होंगे तथा दुनिया के 20 आर्थिक विकास वाले देश अपने–अपने हितों को बढ़ावा देने के लिए भारत में निवेश की प्रवाह को बढ़ा पाएगा। निवेश आने से देश में रोजगार सृजन होगा तथा देश के आर्थिक विकास में योगदान को सुनिश्चित करेगा।

'ग्लोबल साउथ' :–

- भारत द्वारा G20 की अध्यक्षता 'ग्लोबल साउथ' के उद्देश्य को समर्थन देने के साथ–साथ नई महत्वकांक्षा लेकर आई है। इसके साथ ही इसने 'थर्ड वर्ल्ड' की एकजुटता पर नए विचारों और उद्देश्यों को सामने ला दिया है। इससे भारत को एक वैश्विक व्यक्ति के रूप में स्थापित करेगा तथा इससे इन देशों से संबंध स्थापित कर आर्थिक हित को बढ़ावा मिलेगा। ऐसे में जब भारत जी–20 का अध्यक्ष बना है तो यह जी–20 की अध्यक्षता को न केवल देश बल्कि विश्व हित में मुनाना चाहता है। इसी सपनों को लेकर भारत ने ग्लोबल साउथ की आवाज बनने का जिम्मा लिया है।

विकास ऊर्जा खाद्य सुरक्षा :–

- भारत की ऊर्जा सुरक्षा एवं खाद्य सुरक्षा वैश्विक विकास के लिए भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था है। हमें ऊर्जा की आपूर्ति पर किसी भी प्रतिबंध को बढ़ावा नहीं देना चाहिए और ऊर्जा बाजार में स्थिरता सुनिश्चित की जानी चाहिए और ऊर्जा बाजार में भारत स्वच्छ ऊर्जा के लिए प्रतिबद्ध है। ऐसे में खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित होने से देश में आर्थिक विकास को गति प्रदान होगा।

टिकाऊ और समावेशी विकास :–

- G-20 को टिकाउ और समावेशी समुदाय बनाने के लिए हमारी कृषि खाद्य व्यवस्थाओं में निवेश की रफ्तार बढ़ाने हेतु भारत की अध्यक्षता महत्वपूर्ण है।
- हाल ही में जारी की गई स्टेट ऑफ फूड सिक्योरिटी एंड न्यूट्रिशन इन द वर्ल्ड (SOFI) रिपोर्ट के अनुसार 4.6 करोड़ लोगों के पास अपना घर नहीं है। बेहद चिंताजनक खाद्य असुरक्षा विद्यमान है।

- अंतः भारत द्वारा समावेशी विकास को बढ़ावा देने के लिए G-20 के अध्यक्षता के महत्व को देखा जा सकता है।
- **मेक इन इंडिया** :– नए औद्योगिकरण के लिए विदेशी निवेश को आकर्षित करना और चीन से आगे निकलने के लिए भारत में पहले से मौजूद उद्योग आधार का विकास करना इसका उद्देश्य है। G-20 के बैठक से मेक इन इंडिया में बढ़ोतरी होगी तथा FDI को बढ़ावा मिलेगा। जिससे देश में रोजगार सृजन एवं प्रति व्यक्ति आय बढ़ाने में सहयोग मिलेगा।

निष्कर्ष :– स्पष्टतः G-20 की अध्यक्षता भारत के लिए एक सुनहरा अवसर है, जहाँ अपने क्षमता को आगे बढ़ाया जा सके तथा साथ ही आर्थिक विकास में गति प्रदान की जाए। यह अध्यक्षता भारत के लिए एक सुअवसर के रूप में सामने आया है।

(ग) नीति आयोग द्वारा जारी राज्य ऊर्जा एवं जलवायु सूचकांक रिपोर्ट आयोग के प्रगतिशील कदम को दर्शाता है। चर्चा करें

उत्तर हाल ही में 11 अप्रैल 2022 को नीति आयोग ने राज्य ऊर्जा व जलवायु सूचकांक लांच किया है। यह अपनी तरह का पहला सूचकांक है, जिसके अंतर्गत भारत के राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों द्वारा ऊर्जा और जलवायु क्षेत्र में किए गए प्रयासों को ट्रक किया जाएगा। स्वच्छ ऊर्जा परिवर्तन और जलवायु परिवर्तन के संबंध में देश के लक्ष्यों को ध्यान में रखते हुए इस सूचकांक के मापदंडों को तैयार किया गया है। इस सूचकांक के माध्यम से यह जानने का प्रयास किया जाएगा कि राज्य एवं केंद्र शासित प्रदेशों द्वारा जलवायु परिवर्तन से निपटने हेतू कितना प्रभावी कदम उठा रहे है।

राज्य ऊर्जा–जलवायु सूचकांक (SECI) का उद्देश्य :–

- इस सूचकांक का उद्देश्य बेहतर प्रदर्शन के लिए राज्यों के बीच स्वस्थ प्रतिस्पर्धा विकसित करना है। साथ ही साथ उपयोगकर्ता को उनके राज्य में गुणवतापूर्ण आपूर्ति सेवाएँ प्रदान करना है।
- राज्य स्तर पर सस्ती, सुलभ, कुशल और स्वच्छ ऊर्जा के संक्रमण के एजेंडे को चलाने में मदद करेगा, इससे स्वच्छ ऊर्जा को प्रोत्साहन मिलेगा।
- लोगों का ऊर्जा तक पहुँच, ऊर्जा खपत, ऊर्जा दक्षता और पर्यावरण की सुरक्षा में सुधार के प्रयासों के आधार पर राज्यों की रैंकिंग प्रदान की जाएगी जिसमें राज्यों के बीच स्वच्छ ऊर्जा हेतु एक स्वस्थ प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा दिया जा सके।
- राज्यों के आकार और भौगोलिक अंतर के आधार पर बड़े और केंद्रशासित प्रदेशों के रूप में वर्गीकृत किया जाएगा।

प्रमुख बिंदु :–

- स्टेट एनर्जी एंड क्लाइमेट इंडेक्स द्वारा राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को छह मापदंड के आधार पर रैंकिंग प्रदान करता है।
- डिस्कॉम (विद्युत वितरण कंपनियाँ) प्रदर्शन
- सामर्थ्य पहुँच और ऊर्जा की विश्वसनीयता
- ऊर्जा दक्षता
- स्वच्छ ऊर्जा पहल
- नई पहल
- पर्यावरणीय स्थिरता
- इसके अलावा इन मापदंडों को आगे 27 संकेतकों में विभाजित किया गया है।
- नीति आयोग के SECI में शीर्ष प्रदर्शन करने वाले तीन राज्यों के रूप में गुजरात, केरल और पंजाब को चुना गया है।
- छोटे राज्यों में शीर्ष पर गोवा है तथा असंतुलित प्रदर्शन के रूप में सबसे नीचे छतीसगढ़ है।

राज्य ऊर्जा एवं जलवायु सूचकांक एक प्रगतिशील कदम के रूप में

- इस सूचकांक का उपयोग राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों द्वारा अपने साथियों के खिलाफ अपने प्रदर्शन को बेंचमार्क करने बेहतर नीति तंत्र विकसित करने के लिए संभावित चुनौतियों का विश्लेषण करने के लिए किया जा सकता है।
- यह राज्य स्तर पर सस्ती सुलभ, कुशल और स्वच्छ ऊर्जा संक्रमण के एजेंडे पर राज्यों के बीच स्वस्थ प्रतिस्पर्धा को प्रोत्साहित करता है। इसलिए यह प्रगतिशील कदम के रूप में उभरा है।
- स्वच्छ ऊर्जा परिवर्तन और जलवायु परिवर्तन के संबंध में देश के लक्ष्यों को ध्यान में रखते हुए इस सूचकांक के मापदंडों को तैयार किया गया है।
- इस सूचकांक के माध्यम से राज्य एवं केंद्र शासित प्रदेश के जलवायु परिवर्तन से संबंधित कार्य योजनाओं का समीक्षा किया जा सकता है। जिससे प्रभावी बनाया जा सके।
- राज्य स्तर पर सभी को सुलभ एवं कुशल स्वच्छ ऊर्जा तक लोगों के पहुँच को सुनिश्चित किया जा सकता है।
- उत्तम नीति तंत्र विकसित करने से आने वाली बाधाओं का विश्लेषण किया जा सकता है।
- ग्रीन ऊर्जा एवं सतत् ऊर्जा के विकास में राज्य ऊर्जा एवं जलवायु सूचकांक एक विकासशील कदम उठा सकता है।

निष्कर्ष :– स्पष्टतः राज्य ऊर्जा एवं जलवायु सूचकांक नीति आयोग के प्रगतिशील कदम को दर्शाता है, आज पूरा विश्व जलवायु परिवर्तन एवं ऊर्जा संकट से ग्रसित है। ऐसे में नीति आयोग का यह कदम cop-27 के बिंदुओं के प्रति भारत की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। जिससे स्वच्छ ऊर्जा के विकास को सुनिश्चित किया जा सके।